नए नियम की खोज

डॉ. रैंनडाल मेकएल्विन
द्वारा तैयार

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

नए नियम की खोज
डॉ. रैंनडाल मेकएल्विन
EXPLORING THE NEW TESTAMENT
Dr. Randall McElwain

कॉपीराइट • 2015 शेपर्डस ग्लोबल क्लासरूम

सभी अधिकार सुरक्षित। परीक्षा के पृष्ठों को छोड़कर, इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप जैसे - इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग द्वारा एसजीसी (SGC) से लिखित अनुमति के बिना प्रेषित या प्रसारित न किया जाए। हमारे एसजीसी अंग्रेजी पाठ्यक्रम की हर खरीद हमें अनुवाद करने और फिर दुनिया भर के मसीही अगुओं तक इस पाठ्यक्रम को पहुंचाने में सक्षम बनाती है। एसजीसी से संपर्क करने के लिए, या इसके सम्मोहक भविष्य दर्शन के लिए दान करने के लिए, इस वेबसाईट पर जाएंः Shepherds Global Classroom.org.

जब तक इंगित न किया गया हो, तब तक सभी पवित्रशास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबिल हिंदी-बीएसआई ओ.वी पुनः संपादित संस्करण (HINDI-BSI O.V. re-edited version) से हैं। अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ISBN: 978-81-961252-0-2

All rights reserved. No portion of this book may be translated or reproduced in whole or in part in any form without the written permission of the publishers.

Originally published by Shepherds Global Classroom (SGC), USA. Translated, published and printed in India with permission.

This edition is Published by

Cleft Rock Enterprises Pvt. Ltd, India in arrangement with Shepherds Global Classroom (SGC), USA

Printed by:
Cleft Rock Enterprises Pvt. Ltd
Mumbai | India
www.cleftrockindia.com

Price: ₹ 100/-

विषय सूची

कक्षा के अगुओं के लिए दिशा-निर्देश 6

1. नए नियम का समय 7

नए नियम के इतिहास और भूगोल का महत्व

नए नियम का भौगोलिक स्थान

नए नियम का ऐतिहासिक स्थान

नए नियम का सांस्कृतिक स्थान

नए नियम के समय के रीति-रिवाज़

2. सिनॉप्टिक सुसमाचार: मसीह का जीवन 27

सिनॉप्टिक सुसमाचार:

मत्ती: राजा का सुसमाचार

मरकुस: दास का सुसमाचार

लूका: मनुष्य के पुत्र का सुसमाचार

3. यूहन्ना: विश्वास का सुसमाचार 47

यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि

यूहन्ना के सुसमाचार की विषय वस्तु

आज की कलीसिया में यूहन्ना का सुसमाचार

4. प्रेरितों के काम और प्रारंभिक कलीसिया 59

प्रारंभिक कलीसिया का समय

प्रेरितों के काम की पुस्तक की पृष्ठभूमि

प्रेरितों के काम की पुस्तक की विषय वस्तु

आज की कलीसिया में प्रेरितों के काम की पुस्तक

5. रोमियों: परमेश्वर की धार्मिकता 77

रोमियों की पृष्ठभूमि

रोमियों की विषय वस्तु

आज की कलीसिया में रोमियों की पत्री

6. कुरिन्थियों और गलातियों: परेशानी में पड़ी कलीसियाओं को पत्र... 91
1 कुरिन्थियों
2 कुरिन्थियों
गलातियों
आज की कलीसिया में कुरिन्थियों और गलातियों की पत्रियां

7. इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन: जेल से पत्र.... 111
इफिसियों
फिलिप्पियों
कुलुस्सियों
फिलेमोन
आज की कलीसिया में जेल की पत्रियां

8. 1 और 2 थिस्सलुनीकियों: मसीह की वापसी 133
1 और 2 थिस्सलुनीकियों की पृष्ठभूमि
1 थिस्सलुनीकियों: मसीह वापस आएगा
2 थिस्सलुनीकियों: मसीह की वापसी के विषय में गलतफहमियां
आज की कलीसिया में 1 और 2 थिस्सलुनीकियों

9. तीमुथियुस और तितुस: पासबानों को पत्र..... 145
पासबानी पत्रियों का लेखक और तारीख
1 तीमुथियुस
तितुस
2 तीमुथियुस
आज की कलीसियाओं में पासबानी पत्रियां

10. इब्रानियों और याकूब: सामान्य प्रत्रियां, भाग 1 159
इब्रियों को पत्र: एक बेहतर मार्ग
याकूब: विश्वास जो कार्य करता है

11. पतरस, यूहन्ना और यहूदाः सामान्य प्रत्रियां, भाग 2 177

पतरस के पत्रः मुश्किल समयों में विश्वासयोग्यता

यूहन्ना के पत्रः परमेश्वर के साथ संगति

यहूदाः झूठे शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी

आज की कलीसिया में सामान्य पत्रियां

12. प्रकाशितवाक्यः यीशु प्रभु है 191

प्रकाशितवाक्य की पृष्ठभूमि

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ना

आज की कलीसिया में प्रकाशितवाक्य

कक्षा के अगुओं के लिए दिशा-निर्देश

(1) छात्र समूह के रूप में इस पाठ का अध्ययन करने *से पहले* बाइबल की उस पुस्तक या उन पुस्तकों को पढ़े जिनका पाठ में अध्ययन किया जाएगा। प्रत्येक पाठ के अंत में, कृपया छात्रों को अगले पाठ के लिए दिये गये असाइनमेंट, जो पढ़ने के लिये हैं, के विषय में स्मरण करायें। इससे यह सुनिश्चित होगा कि छात्र अध्ययन से पहले पुस्तक की मूल विषय-वस्तु को जानते हैं।

(2) प्रत्येक पाठ पवित्रशास्त्र के एक छोटे लेख को स्मरण करने के असाइनमेंट से शुरू होगा। इसमें अध्ययन की जाने वाली पुस्तकों के प्रमुख वचन शामिल हैं।

(3) यदि आप एक समूह के रूप में अध्ययन कर रहे हैं, तो आप इस विषय वस्तु को बारी-बारी पढ़ सकते हैं। आपको इस विषय-वस्तु पर चर्चा करने के लिए समय-समय पर रुकना चाहिए। कक्षा के अगुए होने के तौर पर आपकी यह ज़िम्मेदारी है कि आप अध्ययन की जा रही सामग्री से चर्चा को भटकने न दें। प्रत्येक चर्चा की अवधि के लिए समय-सीमा निर्धारित करना सहायक है।

(4) जब भी आप इस ►, चिन्ह पर आयें तो प्रश्न पूछें और छात्रों को उत्तर पर चर्चा करने की अनुमति दें।

(5) कई पाद लेख पवित्रशास्त्र के किसी संदर्भ को संदर्भित करते हैं। कृपया एक छात्र को प्रत्येक पद को देखने और उसे समूह में पढ़ने के लिए कहें।

(6) प्रत्येक पाठ में एक असाइनमेंट शामिल होगा। समूह व्याख्यानों के मामले में, छात्रों को अगली कक्षा की शुरूआत में व्याख्यानों के लिए समय दें।

(7) प्रत्येक पाठ में परीक्षा के प्रश्न शामिल होंगे। प्रत्येक कक्षा के अंत में, कक्षा का अगुआ छात्रों के साथ इन सवालों की समीक्षा कर सकता है। अगले कक्षा सत्र की शुरुआत इन प्रश्नों की एक छोटी परीक्षा से होनी चाहिए। यह परीक्षा मौखिक या लिखित रूप में ली जा सकती है।

पाठ 1

नए नियम का समय

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में छात्रः

(1) पलिश्तीन के भूगोल और नए नियम के लिए इसके महत्व को जानें।

(2) नए नियम के ऐतिहासिक स्थान को समझें।

(3) नए नियम पर रोमन, यूनानी और यहूदी प्रभावों को पहचानें।

(4) नये नियम के प्राचीन रीति रिवाजों की सराहना करें।

पाठ

मत्ती 1:1-7; लूका 1:1-5; 2:1-5 को पढ़िए।
गलातियों 4:4-5 को याद कीजिए।

नए नियम के इतिहास और भूगोल का महत्व

► क्या बाइबल का ऐतिहासिक सत्य मसीही विश्वास के लिए महत्वपूर्ण है? क्यों?

मसीहत का विश्वास मानव इतिहास में और यीशु के जीवन में परमेश्वर के कार्यों पर आधारित है, जो ''देहधारी हुआ और हमारे बीच डेरा किया...'' [1] इसी कारण हमें मसीहत के इतिहासिक स्थान को जानने से नए नियम को समझने में मदद मिलती है। इस पाठ की शुरुआत में मत्ती और लूका की पुस्तकों के उद्धरण लेखकों द्वारा यीशु के जीवन के ऐतिहासिक स्थान पर दिये गये ज़ोर को दर्शाते हैं।

मसीहत विश्व के कई धर्मों की तुलना में बहुत अलग है। पूर्वी धर्मों के छात्रों ने यह दर्शाया है कि बौद्ध धर्म बुद्ध के बिना भी एक सा ही है; हिंदू धर्म अपने कई देवताओं के बिना काफी हद तक एक जैसा ही है। परन्तु मसीहत नासरत के यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के बिना खाली है। ''और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।''[2]

---

[1] यूहन्ना 1:14।

[2] 1 कुरिन्थियों 15:14।

मसीहत एक ऐतिहासिक विश्वास है; बाइबल एक ऐतिहासिक पुस्तक है। यह पौराणिक कथाओं और मिथकों से संबंधित नहीं है; यह ऐतिहासिक घटनाओं का एक अभिलेख है। कुछ विद्वान यह दावा करते हैं कि बाइबल पूर्व-वैज्ञानिक मिथकों द्वारा चित्रित महान नैतिक शिक्षाओं का एक संग्रह है। हालाँकि, बाइबल हमें यह विकल्प नहीं देती; पवित्रशास्त्र स्वयं ऐतिहासिक सत्य होने की गवाही देता है।

नया नियम एक विशेष समय, स्थान और संस्कृति की घटनाओं पर आधारित है। यह समय पहली शताब्दी ईसा पश्चात का है; जगह पलिश्तीन है और रोमन सम्राज्य का समय है; संस्कृति यहूदी, यूनानी और रोमन है। इस ऐतिहासिक और भौगोलिक स्थान के महत्व के कारण, हम अपना अध्ययन यीशु और प्रारंभिक कलीसिया के समय के अवलोकन के साथ शुरू करेंगे।

नए नियम का भौगोलिक स्थान

पलिश्तीन का देश इस्राएल के इतिहास और यीशु के सांसारिक सेवकाई का केंद्र है। यहां तक कि ''नासरत का यीशु'' शीर्षक भी उसके जीवन में एक विशेष स्थान के महत्व का संकेत देता है।

पलिश्तीन लगभग 75 किलोमीटर चौड़ा है और 235 किलोमीटर लंबा है।[3] इतना छोटा देश होने पर भी यह क्षेत्र प्राचीन इतिहास की घटनाओं के लिए एक रणनीतिक स्थान था। मिस्र के दक्षिण-पश्चिम में इसका स्थान, उत्तर में सीरिया, उत्तर-पूर्व में असीरिया और पूर्व में बेबीलोन ने इसे व्यापार के लिए एक चौराहा और युद्धनीति बनानें के महत्व का स्थान बना दिया।

पश्चिमी-पूर्वी क्षेत्र की विशेषताएं

पश्चिम से पूर्व की ओर (भूमध्य सागर से यरदन नदी तक) चलते हुए, पलिश्तीन से होकर जाने वाला व्यक्ति तीन अलग-अलग इलाकों से होकर जाता था। भूमध्य सागर के साथ तटीय मैदान से, भूमि मध्य के पहाड़ी इलाक़े से होकर समुद्र तल से लगभग 800 [4]मीटर की ऊंचाई पर है। यरूशलेम इस्राएल का आत्मिक और भौगोलिक रूप से उच्च बिंदु था।

इसके पूर्व में यहूदिया का जंगल है। पहाड़ों और बीहड़ इलाकों का यह क्षेत्र यात्रियों के लिए खतरनाक था और रहने के लिए एक कठिन स्थान था।

---

[3] 145 मील लंबा 45 मील चौड़ा।

[4] 2,600 फीट।

को समझाने के लिए किया जब एक नये विश्वासी को परमेश्वर के परिवार में ग्रहण किया जाता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

रोमी सम्राज्य को स्वयं पर अन्य धार्मिक विश्वासों के प्रति सहिष्णुता के लिए गर्व था परन्तु सभी लोगों के लिए सम्राट की दिव्यता को पहचानना आवश्यक होता था। रोम तब तक यहूदी या मसीही उपदेशों की अनुमति देता है जब तक कि उपासक यह कहते थे कि ''केसर प्रभु है।'' परन्तु यह मसीही संदेश कि ''यीशु मसीह प्रभु है'' रोमन सरकार के लिए अस्वीकार्य था।[27] इसी कारण कलीसिया को रोम के साथ टकराव में आने के लिए ज़्यादा समय नहीं लगा।

हालाँकि मनुष्य ने बुराई की योजना बनाई, लेकिन परमेश्वर ने इसका इस्तेमाल भलाई के लिए किया। उत्पीड़न एक प्राथमिक साधन बन गया जिसका उपयोग परमेश्वर ने महान आज्ञा को आगे बढ़ाने के लिए किया। उत्पीड़न के कारण मसीही ''यहूदिया और सामरिया के क्षेत्रों में तितर-बितर हो गये।'' परमेश्वर की योजना में ''मगर जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।'' [28]

इस रोमन उत्पीड़न के संदर्भ में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी गई थी। यूहन्ना के दर्शन ने दुख उठाते मसीहियों को आश्वासन दिया है कि रोम (या किसी भी शक्ति को जो परमेश्वर के विरोध में है) को पराजित किया जाएगा। पूरा मानव इतिहास परमेश्वर के नियंत्रण में है, न कि केसर के।

नए नियम का यहूदी स्थान

मसीही अपेक्षाएं

इब्रानी शब्द ''मसीह'' युनानी शब्द ''मसीहा'' के अनुरूप है। यीशु के पीछे-पीछे चलने वाली भीड़ मसीहा की तलाश में थी। पौलुस ने यह घोषणा की ''यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।'' [29] एक आने वाले मसीहा की उनकी उम्मीद ने यीशु के प्रचार के लिए लोगों के कानों को खोल दिया।

---

[27] फिलिपियों 2:11।

[28] प्रेरितों के काम 8:1,4।

[29] प्रेरितों के काम 17:3।

सुसमाचार के लेखक, जिन्हें अक्सर सुसमाचार सुनाने वाले भी कहा जाता है, उन्होंने केवल शब्दों को सुनकर उनकी प्रतिलिपियां तैयार नहीं कीं। इसके बजाय, पवित्र आत्मा ने चमत्कारिक रूप से प्रत्येक सुसमाचार सुनाने वाले के व्यक्तित्व के माध्यम से बिना किसी त्रुटि के परमेश्वर के संदेश को संप्रेषित करने का कार्य किया।

एक उदाहरण सुसमाचारों के बीच अंतर दिखाता है। मत्ती, पतरस द्वारा यीशु के प्रभु होने की गवाही, यीशु द्वारा पतरस को आशीष और यीशु द्वारा पतरस को डांटे जाने का विस्तृत विवरण देता है।[41] मरकुस और लूका इस कहानी के केवल छोटे विवरण ही प्रदान करते हैं।[42] मरकुस, पतरस के यीशु के आशीर्वाद को छोड़ देता है जबकि लूका आशीर्वाद और यीशु द्वारा पतरस को फटकारने की कहानी दोनों को छोड़ देता है। कहानियों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है यह तीन अलग-अलग दृष्टिकोणों से प्रस्तुत एक घटना है।

मत्ती 16:13-23	मरकुस 8:27-33	लूका 9:18-22
''शमौन पतरस ने उत्तर दिया, 'तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'।''	''पतरस ने उसे उत्तर दिया, ''तू मसीह है'।''	''और पतरस ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर का मसीह'।''
''और यीशु ने उसे उत्तर दिया, 'हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है'।''	कोई वर्णन नहीं है	कोई वर्णन नहीं है
''और पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसे डांटने लगा, 'हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तुझ पर ऐसा कभी न होगा'।''	''और पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसे डांटने लगा।''	कोई वर्णन नहीं है

कोई भी सुसमाचार यीशु के जीवन की पूरी कहानी नहीं बताता। यूहन्ना ने वास्तव में यह कहा कि उसके कार्यों का पूरा विवरण दुनिया की सभी पुस्तकों में भी नहीं समा पायेगा।[43] सुसमाचार विस्तृत आत्मकथाएँ नहीं हैं। इसके बजाय, पवित्र आत्मा ने प्रत्येक लेखक को यीशु की सेवकाई के विभिन्न पहलुओं पर ज़ोर देने

[41] मत्ती 16:13-23।

[42] मरकुस 8:27-33; लूका 9:18-22।

[43] यूहन्ना 21:25।

शुरुआती कलीसिया के पासबानों ने शमौन पतरस को मरकुस के प्रेरिताई स्रोत के रूप में पहचाना। यूहन्ना मरकुस ने पतरस के साथ मिलकर काम किया कि उसे वह ''मेरा बेटा'' कहता था।[53] मरकुस का सुसमाचार पतरस की यीशु की सेवकाई की पहली यादों का विवरण देता है।

क्योंकि मरकुस के सुसमाचार की घटनाएँ हमेशा मत्ती और लूका के क्रम के अनुसार नहीं है, इसलिए यह जानना उपयोगी है कि एक शुरुआती कलीसिया का पासबान, बिशप पापियास ने प्रेरित युहन्ना का यह कह उल्लेख किया कि मरकुस ''पतरस का दुभाषिया बन गया और उसने वह सब कुछ सही ढंग से लिखा जो उसे याद था और *उस क्रम में नहीं लिखा जो प्रभु ने वास्तव में किया और कहा था।*''[54] मरकुस का विवरण सटीक है परन्तु उसने घटनाओं को एक सख्त क्रम में लिखने का प्रयास नहीं किया।

मरकुस रचित सुसमाचार को सम्भवतः रोम से लिखा गया था और यह मुख्य रूप से अन्यजाती लोगों को संबोधित करने के लिए था। मरकुस अक्सर यीशु द्वारा उपयोग किए गये अरमी वाक्यांशों की व्याख्या करता है।[55] इसके अलावा मरकुस अपने रोमन पाठकों को यहूदी शब्दावली समझाता है। उदाहरण के लिए मरकुस बताता है कि ''दो दमड़ियां'' (यहूदी सिक्के) ''एक अधेले के बराबर हैं'' (एक रोमन सिक्का)।[56]

मरकुस सबसे छोटा सुसमाचार है जिसमें अन्य सुसमाचारों की तुलना में बहुत कम विवरण हैं। मरकुस कार्य का सुसमाचार है, एक ऐसी विशेषता जो शमौन पतरस के प्रभाव को दर्शाती है। यह ''यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र'' के जीवन और उसकी सेवकाई का स्पष्ट और सरल अभिलेख है।[57]

---

[53] 1 पतरस 5:13।

[54] यूसेबियस, कलीसिया संबंधी इतिहास में उद्धृत 3.39.14-17।

[55] पहली सदी के दौरान इब्रानी की जगह, अरमी फिलिस्तीन में इस्तेमाल की जाने वाली आम भाषा थी। अरमी शब्दों के मरकुस के स्पष्टीकरण के उदाहरणों में मरकुस 5:41, 7:11 और 14:36 शामिल हैं।

[56] मरकुस 12:42।

[57] मरकुस 1:1।

लूका के सुसमाचार की विषय वस्तु

► लूका यीशु की मानवता दर्शाने के लिए किन विवरणों पर ज़ोर देता है?

यीशु परमेश्वर का पुत्र

कलीसिया की शिक्षा को मसीह की प्रकृति के विषय में स्पष्ट करने के लिए चालडोनियन के सिद्धांत की रचना 451 ईसा पश्चात में की गई थी। इस सिद्धांत में कहा गया है कि मसीह में दो व्यक्तित्व (ईश्वरीय और मानव) एक ही व्यक्ति में एकीकृत हैं: ''जो ईश्वरत्व में सिद्ध है और मनुष्यता में भी सिद्ध है; जो पूर्ण रूप से परमेश्वर है और पूर्ण रूप से मनुष्य है।''[77] लूका यीशु की मनुष्यता का विशद विवरण प्रदान करता है, ''मनुष्यता में सिद्ध''।

लूका दर्शाता है कि यीशु पूर्ण रूप से मनुष्य था। वह यीशु के जन्म की विस्तृत कहानी प्रदान करता है।[78] हालांकि उसका गर्भाधान अलौकिक था फिर भी यीशु का जन्म एक सामान्य शिशु के रूप में हुआ। वह पूरी तरह से मानव था।

मत्ती की वंशावली, जो मुख्य रूप से यहूदियों को संबोधित करती है, उससे यह पता चलता है कि यीशु अब्राहम के वंश का था। लूका की वंशावली जो एक यूनानी प्राप्तकर्ता को संबोधित करती है, वह यह दर्शाती है कि यीशु मानव का पुत्र था और आदम के वंश का था।[79]

लूका के शुरुआती अध्यायों का क्रम यीशु को ''दूसरा आदम'' के रूप में प्रदर्शित करने के लूका के इरादे को दर्शाता है। मत्ती के समान वंशावली से शुरुआत करने के बजाय, लूका वंशावली को बपतिस्मा के विवरण के बाद रखता है। वंशावली इस प्रकार समाप्त होती है ''वह आदम का पुत्र था, जो परमेश्वर का पुत्र था।'' इसके तुरंत बाद यीशु की परीक्षा का विवरण है। पहला आदम (सुंदर बगीचे में रहने वाला) परीक्षा में पड़ा। दूसरे आदम ने (भोजन के बिना चालीस दिन तक भूखा और जंगल में अकेला) परीक्षा का सामना किया। मनुष्य के रूप में यीशु ने प्रत्येक विश्वासी को परीक्षा का सामना करने का एक उदाहरण प्रदान किया। यीशु ने दर्शाया कि हमें पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से (प्रार्थना के माध्यम से प्राप्त) और पवित्रशास्त्र से शैतान के हमलों का सामना करना चाहिए।[80]

---

[77] http://carm.org/christianity/creeds-and-confessions/chalcedonian-creed-451-ad

[78] लूका 2।

[79] लूका 3:23-38।

[80] लूका 4:1-13।

विपरीत खतरा कलीसिया में पवित्र आत्मा की भूमिका को कम करना है। ऐ.वी. टोज़र ने चेतावनी दी कि कलीसिया ''पवित्र आत्मा के सामर्थ्य की जगह'' पाखंड से भरे और कृत्रिम सामर्थ्य ''का उपयोग कर सकती है।''[101] हाल ही में, फ्रांसिस चान ने चेताया किः ''कलीसिया का कोई महत्व नहीं रह जाता जब यह पूर्ण रूप से मनुष्य द्वारा सृजी और चलाई जाती है। जब हमारे जीवन और कलीसियाओं में हर एक वस्तु का परमेश्वर के आत्मा के काम और उपस्थिति को छोड़कर अर्थ बताया जा सकता है तो हम वे लोग नहीं रह जाते, जिसके लिए हमें रचा गया था।[102]

प्रेरितों के काम कलीसिया में पवित्र आत्मा के महत्व को प्रदर्शित करता है। लूका एक व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा के महत्व को दर्शाता है। यीशु ने अपनी सांसारिक सेवा में पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और सामर्थ्य पर भरोसा किया। आज हमें कलीसिया में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के स्थान पर ''पाखंड से भरे और कृत्रिम सामर्थ्य'' को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष

थॉमस लिनकेयर ऑक्सफोर्ड के प्रोफेसर थे और किंग हेनरी VIII के व्यक्तिगत चिकित्सक थे। पहली बार सुसमाचार पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी डायरी में लिखा, ''या तो यह सुसमाचार नहीं है या हम मसीही नहीं हैं।'' लिनकेयर ने माना कि एक सच्चा मसीह जीवन यीशु मसीह द्वारा रूपांतरित होता है। जब उसने अपने जीवन की और अपने आसपास के मसीहियों के जीवन की तुलना सुसमाचार में यीशु के विवरण से की तो लिनकेयर को मालूम हुआ, ''हम मसीह होने का दावा करते हैं लेकिन हममें यीशु मसीह की छवि नहीं दिखती है।''

मत्ती से राज्य का सुसमाचार, मरकुस से यीशु के द्वारा ज़रूरतमंदों के सेवा का चित्र, लूका से पवित्र आत्मा पर ज़ोर सुसमाचार हमें प्रभू यीशु मसीह की सेवकाई का एक चित्र प्रदान करते हैं। इसके माध्यम से, सुसमाचार यह दर्शाते हैं कि मसीही होने का क्या अर्थ है। जब हम सुसमाचारों को पढ़ते हैं तो हमें खुद से पूछना चाहिए, ''क्या मैं एक ऐसा जीवन जी रहा हूं जो यीशु मसीह के जीवन-परिवर्तनकारी अनुग्रह को दर्शाता है?''

---

[101] A.W. Tozer. *Of God and Men (Chicago, IL: Moody Publishers, reissue edition, 2015)*

[102] Francis Chan. *Forgotten God: Reversing Our Neglect of the Holy Spirit (Colorado Springs, CO: David C Cook, 2009)*

पाठ के असाइनमेंट

निम्नलिखित असाइनमेंट से इस अध्याय की अपनी समझ को दर्शायें:

(1) निम्नलिखित में से **दो** असाइनमेंट चुनें:

- यीशु के दृष्टान्तों में से एक दृष्टान्त पर एक उपदेश या बाइबल पाठ तैयार करें। यह एक 5-6 हाथ से लिखे हुए पृष्ठ या एक रिकॉर्ड किया हुआ उपदेश या पाठ हो सकता है।
- एक मसीही के जीवन में पुनरुत्थान या क्रूस पर चढ़ाये जाने के महत्व पर एक उपदेश या कोई बाइबल पाठ तैयार करें। यह एक 5-6 हाथ से लिखे हुए पृष्ठ या एक रिकॉर्ड किया हुआ उपदेश या पाठ हो सकता है।
- पवित्र सप्ताह की एक समयरेखा तैयार करें जिसका उपयोग शिक्षण के लिए किया जा सकता है। यह एक पेपर-आधारित या कंप्यूटर-जनित व्याख्यान हो सकता है। इस समयरेखा में पवित्र सप्ताह की प्रमुख घटनाएं शामिल हों।
- निम्नलिखित क्षेत्रों और शहरों में से प्रत्येक का स्थान दिखाते हुए पलिश्तीन का नक्शा बनाएँ: यहूदिया, गलील, सामरिया, दिकापुलिस, यरुशलेम, नासरत, यरीहों और कैसरिया फिलिपी।

(2) इस पाठ की विषय-वस्तु के आधार पर एक परीक्षा लें। इस परीक्षा में कुछ वचन शामिल होंगे जिनको आपको याद करना है।

गहराई से खोदना

सिनॉप्टिक सुसमाचारों के विषय में अधिक जानने के लिए कृपया निम्नलिखित संसाधनों को देखें।

मुद्रित स्रोत

Bock, Darrell L. *Baker Exegetical Commentary on the New Testament: Luke (बेकर के द्वारा नए नियम की विवरणात्मक समीक्षा: लूका)* . Baker, 1996.

Garland, David E. *The NIV Application Commentary: Mark. (एन.आई.वी के द्वारा प्रायोगिक समीक्षा: मरकुस)* Zondervan, 1996.

पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है, इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।[103]

ये वचन पवित्रशास्त्र के सबसे परिचित वचनों में से हैं। ये वचन वादा करते हैं कि *जो कोई भी* यीशु में विश्वास करेगा, उसके पास अनन्त जीवन होगा। परन्तु ये वचन पवित्रशास्त्र के सबसे अधिक दुरुपयोग किए जाने वाले वचनों में से भी हैं। ''केवल विश्वास'' की अकसर गलत व्याख्या की जाती है, क्योंकि लोग अपने जीवन में कोई परिवर्तन लाये बिना इसे केवल मानसिक विश्वास समझते हैं। यूहन्ना यह दर्शाता है कि विश्वास मानसिक रूप से विश्वास करने से कहीं अधिक है। ''मुझे विश्वास है'' शब्दों को हृदय से बोलने से आपका जीवन बदल जाएगा। सच्चा विश्वास व्यक्ति की इच्छा और व्यवहार को बदल देता है।

यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि

लेखक, तारीख और स्थान

जब्दी का पुत्र यूहन्ना चौथे सुसमाचार का लेखक था। एंटिओक का इगनाशियस, जस्टिन मार्टियर, पॉलीकार्प और इरेनेउस सभी ने यूहन्ना के लेखकत्व की गवाही दी।

यूहन्ना और उसका भाई याकूब और शमौन पतरस यीशू के बहुत निकट थे। जब यीशु ने एक मृतक लड़की को जिलाया तब ये शिष्य ही उसके साथ कमरे में मौजूद थे।[104] रूपांतरण के पर्वत पर और गतसमनी के बगीचे में भी ये ही यीशु के साथ थे।[105]

यूहन्ना कलीसिया का एक प्रभावशाली अगुआ था। केवल पौलुस ने ही यूहन्ना से अधिक नए नियम की पुस्तकें लिखीं। यूहन्ना ने यूहन्ना का सुसमाचार, तीन पत्रियां और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखीं।

परंपरा के अनुसार, यूहन्ना इफिसुस में रहता था। डोमिशियन के शासनकाल के दौरान यूहन्ना पतमुस में निवास करता था, जहां उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा। उसके बाद वह इफिसुस लौट आया और लगभग 100 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। उसने यूहन्ना के सुसमाचार को शायद इफिसुस में ही लिखा होगा। इसकी तारीख का अनुमान 85-95 ईसा पश्चात का लगाया जाता है जो सुसमाचारों की अंतिम तिथि है।

---

[103] यूहन्ना 3:16-18।

[104] मरकुस 5:37-42।

[105] मत्ती 17:1-9; मरकुस 14:32-36।

उद्देश्य

यूहन्ना का सुसमाचार सिनॉप्टिक सुसमाचारों से स्पष्ट रूप से भिन्न है। यूहन्ना में यीशु द्वारा दुष्टात्माओं को निकाले जाने के विषय में किसी घटना का वर्णन नहीं है, इसमें कोई दृष्टान्त नहीं है और मरकुस की पुस्तक के जैसे इसमें कोई ''मसीहाई रहस्य'' नहीं है।

जबकि कई लेखकों ने यूहन्ना और सिनॉप्टिक सुसमाचारों के बीच अंतर को देखा है फिर भी इनके बीच समानताओं को देखना भी महत्वपूर्ण है। यूहन्ना यीशु के जीवन का एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, परन्तु उसका संदेश अन्य सुसमाचारकों के समान ही है। यूहन्ना यह दर्शाता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है जो हमारे बीच रहा, हमारे पापों के लिए सूली पर चढ़या गया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। यूहन्ना का उद्देश्य यीशु के प्रभु होने के साक्ष्य को दर्शाना है।

यीशु से संबंधित दो शुरुआती विरुद्ध मत थे। एक ने उसके संपूर्ण मनुष्यत्व को यह दावा करते हुए नकार दिया कि यीशु केवल दिखने में मनुष्य था। लूका ने यीशु का पूर्ण रूप से मनुष्य होने का वर्णन करके इस त्रुटी का हवाला दिया। दूसरे विरुद्ध मत ने उसके परमेश्वर होने का खंडन यह दावा करते हुए किया की वह एक महान शिक्षक था परन्तु परमेश्वर का पुत्र नहीं था। यूहन्ना यीशु के प्रभुत्व पर खास ध्यान देते हुए उसके द्वारा किये गये चमत्कारों की श्रृंखला का वर्णन करता है जो उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट करते हैं और ऐसे कथनों का भी उपयोग करता जो यह दर्शाते हैं कि वह वचन देहधारी बना। यूहन्ना का उद्देश्य यह है ''कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।''[106]

यूहन्ना के सुसमाचार की विषय वस्तु

प्रस्तावना (यूहन्ना 1:1-18)

यीशु राजा को यहूदी लोगों के सामने पेश करते हुए, मत्ती ने यीशु को दाऊद से लेकर अब्राहम तक का वंश बताया। **यीशु सेवक** को को रोमन लोगों के सामने पेश करते हुए, मरकुस ने किसी वंशावली का वर्णन नहीं किया। **मनुष्य के पुत्र** को यूनानी लोगों के सामने पेश करते हुए, लूका ने यीशु को आदम तक का वंश बताया, जो पहला मनुष्य था। **यीशु को परमेश्वर का पुत्र** पेश करते

[106] यूहन्ना 20:31।

''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा।''[122] मनुष्य का पुत्र ''सब मनुष्यों'' को अपने पास खींचने के लिए क्रूस पर ''चढ़ाया'' गया ताकि वे ''नाश न हों, परन्तु उनके पास अनन्त जीवन हो।'' उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने को ''उसकी महिमा का क्षण'' भी कहा जाता है।[123] यह वही महिमा थी जिसके लिए वह दुनिया में आया था।

पुनरुत्थान के बाद यूहन्ना ने थोमा की गवाही के साथ इस खंड का समापन किया, ''मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर।''[124] यीशु के पुनरुत्थान की परिवर्तित शक्ति को थोमा के बाद के जीवन में देखा जा सकता है, भारत में प्रचार करते समय वह शहीद हो गए।

उपसंहार (यूहन्ना 21)

यूहन्ना के अंतिम अध्याय में गलील सागर के पास यीशु द्वारा अपने चेलों को दर्शन देने का वर्णन है।[125] यूहन्ना ने अपने विवरणों के सत्य की पुष्टि करके अपने सुसमाचार को समाप्त किया, ''यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही देता है और जिस ने इन बातों को लिखा है और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।''[126]

आज की कलीसिया में यूहन्ना का सुसमाचार

यूहन्ना की पुस्तक नए विश्वासियों को यीशु का ईश्वरीय स्वरूप प्रगट करती है। यीशु की अपनी स्पष्ट और सरल प्रस्तुति के कारण, पासबान अक्सर नए विश्वासियों को यूहन्ना के सुसमाचार को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यूहन्ना में हम यीशु को ''जीवन की रोटी'' (6:35) के रूप में; ''दुनिया की ज्योति'' के रूप में (8:12); ''अच्छे चरवाहे'' के रूप में (10:11); ''पुनरुत्थान और जीवन'' के रूप में (11:25); और मार्ग, सत्य और जीवन के रूप में देखते हैं (14:6)।

---

[122] यूहन्ना 12:32।

[123] यूहन्ना 12:23।

[124] यूहन्ना 20:28।

[125] यूहन्ना 21:1। यूहन्ना गलील की झील को एक अलग नाम, तिबिरियासकी झील से पुकारता है। तिबिरियास गलील की राजधानी थी।

[126] यूहन्ना 21:24।

संदेहवादी संसार को यूहन्ना यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट करता है। यूहन्ना में वर्णित चमत्कार उन लोगों से बात करते हैं जो यीशु के परमेश्वर होने के दावे के प्रमाण को ढूंढते हैं। चमत्कारों के माध्यम से यीशु ने प्रदर्शित किया उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य उसके ''मैं जो हूं सो हूं'' होने के दावे का आधार थी।[127]

एक आधुनिक कलीसिया जो सच्चे चेलेपन की बुलाहट के बगैर ''बिना किसी कीमत के अनुग्रह'' का उपदेश देती है[128] उसे यूहन्ना का सुसमाचार विश्वास का सही अर्थ दिखाता है। सच्चा विश्वास एक मसीही के जीवन को बदल देता है। यीशु को ''जीवन की रोटी'' के विषय में बात करते सुनने के बाद ''उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।''[129] इन अनुयायियों ने यह दावा किया होगा कि वे यीशु में ''विश्वास'' करते थे। वे उसके पीछे-पीछे चले, उन्होंने रोटी और मछलियों का आनंद उठाया, परन्तु उन्होंने वास्तव में विश्वास नहीं किया। उन्होंने यीशु की मांगो का लगातार आज्ञापालन न करके अपने विश्वास को पूरा नहीं किया। यूहन्ना का सुसमाचार सच्चे विश्वास का अर्थ सिखाता है।

निष्कर्ष

यूहन्ना के सुसमाचार से पता चलता है कि सच्चा विश्वास एक विश्वासी के जीवन को बदल देता है, यह विश्वासी के जीवन को नुकसान भी पहुंचा सकता है। डिट्रिच बोनहॉफ़र ने ''बिना किसी कीमत के अनुग्रह'' और ''कीमत से भरे अनुग्रह'' में अंतर दिखाया। उन्होंने लिखा, ''जब मसीह किसी मनुष्य को बुलाता है तो वह उससे कहता है कि आओ और अपने प्राण को त्यागो।''[130] इस प्रकार का सच्चा विश्वास दूसरी शताब्दी के शहीद पॉलीकार्प के जीवन में देखा जाता है।

पॉलीकार्प प्रेरित यूहन्ना का चेला था। उसने यूहन्ना की शिक्षा को सुना था और यूहन्ना से यीशु के जीवन की घटनाओं के बारे में सुना था। 86 साल की उम्र में पॉलीकार्प को गिरफ्तार किया गया था। अधिकारी इस तरह के एक सम्मानित बूढ़े व्यक्ति को मृत्युदंड नहीं देना चाहते थे और उसे ''केसर प्रभु है'' बोलकर अपनी जान बचाने का मौका दिया। मजिस्ट्रेट ने कहा, ''यह कसम खाओ और

---

[127] यूहन्ना 8:58।

[128] शब्द ''बिना किसी कीमत के अनुग्रह'' Dietrich Bonhoeffer की पुस्तक *The Cost of Discipleship* से आता है।

[129] यूहन्ना 6:66.

[130] Dietrich Bonhoeffer *(The Cost of Discipleship)* Translated by R.H. Fuller. Touchstone, 1995, 89.

2:17-3:8 में, पौलुस अपने **यहूदी दर्शकों** से बात करता है। कई सवालों के ज़रिये, पौलुस उस यहूदी का न्याय करने में परमेश्वर की धार्मिकता का बचाव करता है जिसने ''व्यवस्था के तहत पाप किया।''

3:9-20 में, पौलुस यह निष्कर्ष निकलता है कि, ''कोई धर्मी नहीं है, एक भी नहीं।''[167] संपूर्ण मानव जाति पवित्र परमेश्वर के समक्ष दण्ड के योग्य ठहरती है।

न्याय का उपदेश करना

''सुसमाचार प्रचारक का पहला कर्तव्य परमेश्वर की व्यवस्था को घोषित करना है, क्योंकि यह एक शिक्षक के रूप में कार्य करेगा और उसे अनंत जीवन प्रदान करेगा जो यीशु मसीह में है।''

- मार्टिन लूथर

''इससे पहले कि मैं प्रेम, दया और अनुग्रह का प्रचार करूं, मुझे पाप, व्यवस्था और न्याय का प्रचार करना चाहिए।''

- जॉन वेस्ली

''वे तब तक कभी अनुग्रह को स्वीकार नहीं करेंगे जब तक कि वे न्यायपूर्ण और पवित्र कानून व्यवस्था के सामने कांप न जाएं।''

- चार्ल्स स्पुरजियन

''जब तक हम मूसा के द्वारा दंडित न हों, तब तक हम धर्मी ठहरने के लिए मसीह के पास नहीं आ सकते।''

- जॉन स्टोट

परमेश्वर की धार्मिकता उद्धार में प्रकट हुई (रोमियों 3:21-8:39)

दंड की बुरी ख़बर के बाद, पौलुस अच्छी ख़बर (''सुसमाचार'') की ओर बढ़ता है कि हम परमेश्वर के सामने सही कार्यों से धर्मी नहीं ठहरते अर्थात ''परमेश्वर की उस धार्मिकता से, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिये है।''[168] पौलुस यह दर्शाता है एक विश्वासी के उद्धार और परिवर्तन में परमेश्वर की धार्मिकता कैसे प्रकट होती है।

धार्मिकता केवल विश्वास से प्रगट होती है (रोमियों 3:21-5:21)

जिस तरह अब्राहम केवल विश्वास के ज़रिए धर्मी ठहरा, उसी तरह हम भी विश्वास के ज़रिए ठहरते हैं, न कि कामों के द्वारा। हमारा यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा प्रदान किए गए प्रायश्चित के माध्यम से परमेश्वर के साथ मेल मिलाप होता है। उसके माध्यम से, हम महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं। उसके माध्यम से, हमारे पास जीवन है। पौलुस यह दर्शाता है कि यीशु मसीही के माध्यम से परमेश्वर द्वारा दिये जाने वाले मुफ्त अनुग्रह को छोड़कर न तो यहूदी और न ही

[167] रोमियों 3:10।

[168] रोमियों 3:22।

वंश विश्वास पर आधारित है, न कि जातीय मूल पर।[175] परमेश्वर ने इस्राएल को नहीं छोड़ा है, बल्कि परमेश्वर सब देशों को आशीष देने के लिए इस्राएल *के माध्यम से* काम कर रहा है। सब देशों को आशीष देने का वादा अब्राहम[176] से किया गया था; इसकी घोषणा इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा की गई थी[177]; अब यह वादा अन्यजातियों में पूरा हो रहा है।[178] अन्यजातियों को परमेश्वर द्वारा आशीष दिया जाना इस्राएल का अंतिम त्याग नहीं है। इस्राएल के लिए उसका उद्देश्य पूरा होगा।

रोमियों 9-11 तीन सत्यों के साथ इस्राएल के अविश्वास की समस्या को संबोधित करता है:[179]

- परमेश्वर के वादे *हमेशा* विश्वासियों को संबोधित होते थे। इस्राएल के वादे **अतीत में** उन सभी लोगों के लिए जो विश्वास करते थे - इस्राएल में शेष बचे वफादार और अन्यजाति दोनों के लिए (9:6-29)।
- इस्राएल को उसके अविश्वास के कारण त्याग दिया गया। **वर्तमान में**, अन्यजातियों ने धार्मिकता प्राप्त कर ली है, जो विश्वास की है, जबकि इस्राएल ने धार्मिकता प्राप्त नहीं की है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था के कार्यों द्वारा इसे खोजने का प्रयास किया (9:30-10:21)।
- इस्राएल का त्याग अस्थायी है, अंतिम नहीं है। परमेश्वर अपने वादों को नहीं भूला है। **भविष्य में**, संपूर्ण इस्राएल को बचाया जाएगा जब वे परमेश्वर में विश्वास करेंगे (11:1-36)।

---

[175] रोमियों 9:6-8।

[176] उत्पत्ति 12:3।

[177] यशायाह 56:1-8 कई उदाहरणों में से एक है।

[178] रोमियों 11:11।

[179] William M. Greathouse and George Lyons, *Romans: A Commentary in the Wesleyan Tradition लिया गया।* Beacon Hill Press, 2008.

इसी से संबंधित, पौलुस विश्वासियों के बीच मुकदमों को संबोधित करता है। जबकि कुरिन्थुस के लोग कलीसिया में खुले पाप का न्याय करने से बचते थे, फिर भी वे बहुत जल्दी सार्वजनिक अदालतों में व्यक्तिगत शिकायतों को ले जाते थे। इसलिए पौलुस यह पूछता है कि यदि वे मसीही भाइयों के बीच विवादों को निपटाने में पर्याप्त समझदार नहीं हैं तो वे ''संसार का न्याय'' कैसे कर सकते हैं।

कुरिन्थियों के प्रश्न (1 कुरिन्थियों 7:1-16:9)

पौलुस अब प्रश्नों की एक श्रृंखला को संबोधित करता है जो कुरिन्थियों ने पौलुस को भेजे एक पत्र में पूछे थे।[200] प्रत्येक विषय को ''अब इसके विषय में...'' वाक्यांश के साथ पेश किया जाता है। पौलुस उनके सवाल को इस्तेमाल करके उनके द्वारा उठाए गये मुद्दे पर प्रतिक्रिया देता है।

कुवांरापन और विवाह (1 कुरिन्थियों 7:1-23)

कुछ लोग यह शिक्षा दे रहे थे कि ''यह अच्छा है कि पुरूष स्त्री को न छुए।''[201] पौलुस का जवाब है कि विवाह यौन अभिव्यक्ति के लिए उचित संदर्भ है। इस खंड में, वह तलाक की समस्या को भी संबोधित करता है, एक ऐसा मुद्दा जो विशेष रूप से उन नए विश्वासियों के लिए मुश्किल था जो गैर-मसीहियों से शादी कर रहे थे।

अविवाहित और विधवा (1 कुरिन्थियों 7:25-40)

''वर्तमान संकट'' के कारण, पौलुस का मानना था कि अविवाहितों के लिए अविवाहित रहना ही सबसे उत्तम होगा। हालाँकि, उसने यह स्पष्ट किया कि यह उसका व्यक्तिगत निर्णय था न कि ''प्रभु की आज्ञा।'' ''वर्तमान संकट'' रोमन सरकार द्वारा विश्वासियों के उत्पीड़न को दर्शाता है। यह बढ़े हुए उत्पीड़न की संभावना को भी दर्शा सकता है क्योंकि प्रभु यीशु की वापसी का ''नियत समय'' निकट है।[202]

मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन (1 कुरिन्थियों 8:1-11:1)

► आपकी सेवकाई के संदर्भ में, मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले भोजन के कुरिन्थियों के इस मुद्दे के साथ कौन सी सांस्कृतिक प्रथाओं की समानता है?

---

200 1 कुरिन्थियों 7:1।

201 1 कुरिन्थियों 7:1।

202 1 कुरिन्थियों 7:29।

आराधना और वरदान (1 कुरिन्थियों 11:2-14:40)

इसके बाद पौलुस अधिकार के मामलों, प्रभु भोज के पालन और आत्मिक वरदानों का वर्णन करता है। ये मुद्दे गर्व और विभाजन के कारण उत्पन्न हुए जो कुरिन्थुस की कलीसिया को तोड़ रहे थे। कुरिन्थुस के लोग स्वयं को एक ही देह के सदस्य समझने के बजाय, अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग स्वयं की उन्नति के लिए कर रहे थे। इस दृष्टिकोण के प्रति उचित प्रतिक्रिया यह याद रखना है कि प्रेम आत्मिक वरदानों से बड़ा है।

मसीह और मृतकों का पुनरुत्थान (1 कुरिन्थियों 15)

मृत विश्वासियों के भविष्य के बारे में सवालों के जवाब में, पौलुस मसीह के पुनरुत्थान के ऐतिहासिक सत्य को स्थापित करके शुरुआत करता है। फिर वह यह तर्क करता है कि यीशु का पुनरुत्थान ''उन लोगों में से जो सो गये है पहला फल है।'' क्योंकि मसीह ने मृत्यु पर विजय पाई इसलिए विश्वासियों के पास पुनरुत्थान का वचन है।

यरूशलेम के विश्वासियों के लिए इकट्ठा किया गया दान (1 कुरिन्थियों 16:1-4)

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस ने यरूशलेम के उन विश्वासियों की आर्थिक सहायता के लिए अन्यजाती कलीसियाओं से भेंट एकत्र की, जो यहूदी धर्मगुरुओं के सताव के कारण दुख उठा रहे थे। यह भेंट कलीसिया की एकता के सिद्धांत की व्यावहारिक अभिव्यक्ति के रूप में पौलुस के लिए महत्वपूर्ण था। इस भेंट के द्वारा अन्यजाती मसीहियों ने दिखाया कि कलीसिया में उनकी सदस्यता में उनके साथी (यहूदी) मसीहियों की आर्थिक सहायता का दायित्व शामिल था।

अंतिम अभिवादन (1 कुरिन्थियों 16:5-24)

पौलुस अपने पत्र का अपनी कुरिन्थुस की भावी यात्रा की योजनाओं के साथ, अपने हाथ से लिखे हुए नमस्कार और अंतिम अभिवादन के साथ समापन करता है।

2 कुरिन्थियों

2 कुरिन्थियों की स्थापना और उद्देश्य

2 कुरिन्थियों को 1 कुरिन्थियों के एक साल बाद लिखा गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि तीमुथियुस की यात्रा से कुरिन्थुस की समस्याओं का कोई हल नहीं

पौलुस और कुरिन्थुस की कलीसिया	
पौलुस के कुरिन्थुस के दौरे	***कुरिन्थुस को पौलुस के पत्र***
पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा कै दौरान स्थापित की गई कलीसिया (50 ईसा पश्चात)	
	एक अज्ञात पत्र[207]
	1 कुरिन्थियों, जिसे इफिसुस से लिखा गया है और तीमुथियुस के हाथ भेजा गया (55 ईसा पश्चात)
एक ''दुःखद'' यात्रा जिसके दौरान पौलुस के अधिकार को अस्वीकार कर दिया गया था[208]	
	एक अज्ञात ''गंभीर'' पत्र, जिसे इफिसुस से तितुस के हाथ भेजा गया, जिससे लोगों ने पश्चाताप किया[209]
	2 कुरिन्थियों, मकिदुनिया में लिखा गया और तितुस के हाथ भेजा गया (56 ईसा पश्चात)
कुरिन्थुस को पौलुस की अंतिम यात्रा (57 ईसा पश्चात)[210]	

2 कुरिन्थियों की विषय वस्तु

2 कुरिन्थियों की शैली इसके विविध उद्देश्यों को दर्शाती है। यह विभिन्न लेखों के एक संग्रह के प्रकार है जो पौलुस की कई अलग-अलग मुद्दों के प्रति प्रतिक्रिया को दिखाता है। 1 कुरिन्थियों की तरह यह एक सामयिक पत्र है जो कुरिन्थुस की स्थिति से जुड़े खास मुद्दों से निपटता है। इस व्यापक पत्र के संक्षेप के बजाय, इसके कुछ विषयों की पहचान करना और अधिक उपयोगी होगा जिन्हें इस पत्र में संबोधित किया गया है।

---

[207] 1 कुरिन्थियों 5:9।

[208] 2 कुरिन्थियों 2:1।

[209] 2 कुरिन्थियों 7:8-16।

[210] 2 कुरिन्थियों 12:14।

पौलुस आत्मा के फल की देह के कार्यों के साथ तुलना करता है।[229] वह सिखाता है कि यदि हम आत्मा में रहते हैं तो हम आत्मा में चलेंगे, हम अपने जीवन में उसके फल को दिखाएंगे। यदि हम देह में बोते हैं तो हम भ्रष्टता काटेंगे। यदि हम आत्मा में बोते हैं तो हम अनंत काल का जीवन काटेंगे।[230] प्रेम की व्यवस्था पाप की अनुमति नहीं है। इसके बजाय, प्रेम हमें परमेश्वर की आज्ञा में चलने के लिए सशक्त बनाता है।

प्रेम की व्यवस्था में एक विश्वासी के लिए बड़े व्यावहारिक परिणाम हैं। इस प्रकार जी कर हम उन लोगों को बहाल करेंगे जो परीक्षा में पड़ते हैं, हम एक दूसरे के बोझ को उठाएंगे, हम अपने विषय में ठीक से सोचेंगे और हम अनन्त जीवन काटेंगे।[231] यह सच्ची मसीही स्वतंत्रता है।

आज की कलीसिया में कुरिन्थियों और गलातियों की पत्रियां

जब हम कलीसिया में परेशानी का सामना करते हैं, तो हम कभी-कभी यह सोचने के लिए मजबूर होते हैं, ''अतीत में यह कभी इतना बुरा नहीं था!'' कुरिन्थियों और गलातियों हमें स्मरण कराती हैं कि, ''आज की समस्याएं नई नहीं हैं।'' ये पत्र सीधे 21वीं सदी की कलीसिया से बात करते हैं।

1 कुरिन्थियों हमें **कलीसिया की एकता** की याद दिलाता है। हालाँकि हम कई क्षेत्रों में भिन्न हैं फिर भी मसीह की देह एक ही देह है। सत्य हमारा कलीसिया के भीतर मतभेदों को संभालने में मार्गदर्शन करे; यह हमारा मसीहियों के बीच विवादों को सुलझाने में मार्गदर्शन करे और यह मसीह की देह का निर्माण करने के लिए हमारे वरदानों का उपयोग करने में हमारा मार्गदर्शन करे।

ये पत्र हमें याद दिलाते हैं कि हम **मेल मिलाप की सेवा** के लिए बुलाए गये हैं। कुरिन्थियों में, पौलुस यह दर्शाता है कि जब कलीसिया में विभाजन हो तो क्षमा स्वतंत्र रूप से दी जानी चाहिए। इसी तरह, गलातियों में पौलुस यह दर्शाता है कि हमें गिरने वालों को बहाल करने की कोशिश करनी चाहिए।

सुसमाचार: हमारा विश्वास से उद्धार होता है।

जुडाइज़र: हमारा विश्वास + व्यवस्था द्वारा उद्धार होता है।

आज के समय में सुसमाचार के लिए खतरे: हमारा विश्वास + _____ द्वारा उद्धार होता है।

[229] गलातियों 5:19-23।

[230] गलातियों 6:8 ।

[231] गलातियों 6:1-8।

व्यक्ति मदद के लिए पुकार रहा है।[248] हालाँकि ''फिलिप्पी मकिदुनिया के उस हिस्से का मुख्य शहर था,'' फिर भी यहां यहूदियों की आबादी अधिक नहीं थी। प्रार्थना सभा नदी के किनारे होती थी क्योंकि वहाँ कोई आराधनालय नहीं था।[249]

फिलिप्पी में पहले विश्वासी लोगों में से एक धनवान स्त्री लुदिया थी। उसके बपतिस्मे के बाद, लुदिया का घर विश्वासियों के लिए एक सभा स्थल बन गया। बड़ी यहूदी आबादी वाले शहरों में, सुसमाचार का विरोध आमतौर पर धार्मिक धर्मगुरुओं द्वारा होता था। परन्तु फिलिप्पी में, पौलुस और सिलास ने तब विरोध का सामना किया जब उन्होंने उन लोगों की आय को बाधित कर दिया, जिन्होंने एक दुष्टात्मा-पीड़ित दास लड़की को अपने नियंत्रण में रखा था। पौलुस और सिलास को गिरफ्तार किया गया, पीटा गया और जेल में डाल दिया गया। उस रात, एक भूकंप ने जेल के दरवाज़े खोल दिए, और कैदियों की जंजीरें खुल गईं। भागने के बजाय, पौलुस और सिलास ने जेलर को सुसमाचार सुनाया।

प्रेरितों के काम में, लूका ने इस विवरण को शामिल किया है, कि फिलिप्पी ''एक कॉलोनी थी।''[250] यह सरल कथन प्रेरितों के काम के शुरुआती पाठकों के लिए बहुत मायने रखाता था। फिलिप्पी को 42 ईसा पूर्व में रोम की कॉलोनी के तौर पर स्थापित किया गया था, रोमन जनरल एंटनी द्वारा। कई सैनिक इस शहर में सेवानिवृत्त हुए और नागरिकों को कई रोम के करों से छूट मिलती थी। एक कॉलोनी के रूप में फिलिप्पी की प्रतिष्ठा इसके नागरिकों के लिए गर्व की बात थी। पौलुस इस मानसिकता की ओर संकेत करता है जब वह फिलिप्पी मसीहियों से स्वर्ग के नागरिकों के रूप में रहने की विनती करता है।[251]

उद्देश्य

फिलिप्पियों पौलुस के सबसे सकारात्मक पत्रों में से एक है जो कुछ ही समस्याओं को दर्शाता है, जिनको उसने कुरिन्थुस और गलातिया के अपने पत्रों में संबोधित किया। इस पत्र के लिखे जाने के दो कारण हैं।

---

[248] प्रेरितो के काम 16:8-40।

[249] कोई भी शहर जिसमें दस यहूदी रहते थे, उसमें एक आराधनालय होता था।

[250] प्रेरितों के काम 16:12।

[251] फिलिप्पियों 3:20, ''परन्तु हमारी नागरिकता स्वर्ग में है....'' इसी यूनानी शब्द का उपयोग फिलिप्पयों 1:27 में किया गया हैः ''केवल इतना करो कि तुम्हारा **चाल-चलन** मसीह के सुसमाचार के योग्य हो...''

इसका एक *निजी उद्देश्य* पौलुस के जेल में बंद होने की ख़बर देना है और कलीसिया के लिए उसकी सेवकाई के वित्तीय समर्थन के लिए प्रशंसा व्यक्त करना है।[252] पौलुस उनकी विश्वासयोग्यता से आनन्दित होता है और उन्हें आनंदमय जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है।

और इसका *शिक्षण संबंधी उद्देश्य* फिलिप्पियों की कलीसिया को दो खतरों के विषय में बताना है: बाहरी खतरा झूठे शिक्षकों से आता है जबकि आंतरिक खतरा कलीसिया के दो सदस्यों के बीच विभाजन से आता है।

विषय वस्तु

ख़राब परिस्थितियों के बावजूद आनंद (फिलिप्पियों 1)

हालाँकि पौलुस जेल में बंद है, फिर भी उसे पूरा आत्मविश्वास है कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। पौलुस की गिरफ्तारी के कारण, उनके पास भवन के पहरेदार को सुसमाचार सुनाने का अवसर मिला। पौलुस को नहीं पता कि उसकी कैद रिहाई या मृत्यु में समाप्त होगी। लेकिन परिणाम की परवाह किए बिना, वह आनन्दित होता है क्योंकि ''मेरे लिए जीना मसीह है और मरना लाभ है।''[253]

एक और परिस्थिति जो पौलुस के आनंद को खतरे में डाल सकती थी, वह उसके साथी विश्वासियों की ईर्ष्या थी। रोम में एक समूह ''विरोध से'' मसीह का प्रचार कर रहा था, ताकि पौलुस की परेशानी और अधिक बढ़े। हालाँकि, उनके इस मकसद की परवाह किए बिना, पौलुस आनन्दित होता है क्योंकि सुसमाचार का प्रचार हो रहा था। पौलुस को भरोसा है कि इन लोगों के गलत इरादे होने पर भी सुसमाचार से भलाई उत्पन्न होगी। पौलुस की व्यक्तिगत स्थिति परमेश्वर के राज्य से कम महत्वपूर्ण है।[254]

---

[252] फिपिप्पियों 4:15-18।

[253] फिलिप्पियों 1:12-14, 19-25।

[254] फिपिप्पियों 1:15-18।

सुसमाचार के शत्रुओं के विरूद्ध चेतावनी (फिलिप्पियों 3)

हालाँकि, फिलिप्प्यों काफी हद तक सकारात्मक है, फिर भी पौलुस उन उपद्रवियों के एक समूह के खिलाफ कड़ी चेतावनी देता है जो कलीसिया को संकट में डालते हैं। ये लोग जुडाइज़र हैं जो गलातिया के पत्र में पहले भी देखे गए हैं। वे यह चाहते हैं की मसीही खतना और यहूदी व्यवस्था का पालन करें। पौलुस उन्हें ''कुत्ते,'' ''बुरे काम करने वाले'' और ''काट कूट करने वाले'' कहता है।

पौलुस एक उदाहरण के रूप में अपने स्वयं के जीवन की ओर संकेत करके व्यवस्था के अनुष्ठान को मानने के जुडाइज़रों के आग्रह का जवाब देता है। यदि व्यवस्था का पालन करने से उद्धार होता है तो पौलुस को ''देह पर भरोसा होगा। '' व्यवस्था के अनुसार उसका खतना किया गया था, वह बिन्यामीन के गोत्र का था, जो ''इब्रानियों का इब्रानी'' था; वह एक फरीसी था जिसने ध्यानपूर्वक व्यवस्था का पालन किया, वह यहूदियों के विश्वास के लिए बहुत उत्साही था, यहां तक कि मसीहियों को सताने के लिए भी पौलुस व्यवस्था के कारण निर्दोष था। फिर भी उसने यीशु मसीह में परमेश्वर की बुलाहट के पुरस्कार की तलाश में इन सब वस्तुओं को कूड़ा ही समझा। पौलुस का उद्धार, फिलिप्पियों का उद्धार और हमारा उद्धार, व्यवस्था के आज्ञापालन से नहीं हुआ, बल्कि ''मेरे प्रभु यीशु मसीही के ज्ञान'' के अनुभव से उद्धार हुआ।[258]

उपदेश का समापन (फिलिप्पियों 4)

अंतिम अध्याय में, पौलुस ने यूओदिया और सुन्तुखे को भी समझाया कि वे उस एकता को दर्शाएं जो उस ने अध्याय 2 में सिखायी है। यदि इन महिलाओं के पास मसीह का मन है तो वे अपने विवादों को हल करेंगी। वह सभी परिस्थितियों में आनंद मनाने और अपने दिल और दिमाग में परमेश्वर की शांति बनाए रखने के लिए कलीसिया को समझाता है। वह अपनी सेवकाई के लिए कलीसिया के समर्थन के लिए धन्यवाद के साथ पत्र का समापन करता है।

कुलुस्सियों

ऐतिहासिक स्थान

रोम में पौलुस के कारावास के दौरान कुलुस्सियों को लिखा गया था। तीमुथियुस को भी लेखक के रूप में नामित किया गया है[259], शायद वह पौलुस के सहायक के रूप में कार्य कर रहा था।

[258] फिलिप्पियों 3:4-8।

[259] कुलुस्सियों 1:1।

ऑनलाइन स्रोत

''Church and Mission in Ephesians'' (कलीसिया और मिशन इफिसियों में) http://www.seedbed.com/seven-minute-seminary/ पर

Wesley, John. *Wesley's Explanatory Notes on the New Testament (नए नियम पर वेस्ले की व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ)।*

http://www.biblestudytools.com/commentaries/wesleys-explanatory-notes/

पाठ 7 के परीक्षा प्रश्न

(1) जेल की पत्रियों को कब और कहाँ से लिखा गया था?

(2) इफिसियों में कोई निजी अभिवादन क्यों नहीं है?

(3) इफिसियों के दो बड़े विभागों को सूचीबद्ध करें।

(4) इफिसियों 1 से, त्रिएकता के प्रत्येक सदस्य की हमारे उद्धार में भूमिका को सूचीबद्ध करें।

(5) इफिसियों 3 के अनुसार, ''सुसमाचार का रहस्य'' क्या है?

(6) फिलिप्पियों की कलीसिया के सामने आने वाले दो खतरों को सूचीबद्ध कीजिए।

(7) फिलिप्पियों 2 में, इसका क्या मतलब है कि मसीह ने ''खुद को दीन किया''?

(8) किन तीन प्रभावों से कुलुस्सियों की कलीसिया में विरुद्ध मत उत्पन्न हुआ?

(9) सिंक्रेटिज़म (समन्वयवाद) को परिभाषित कीजिए।

(10) उन तीन तरीकों को सूचीबद्ध करें, जिनके द्वारा जेल की पत्रियां आज की कलीसिया से बात करती हैं।

उपद्रव पौलुस पर केंद्रित था क्योंकि वह सीलास और तीमुथियुस को बिरीया में छोड़कर एथेंस गया था।

एथेंस से, पौलुस ने कुरिन्थुस की पश्चिम की ओर कूच किया जहाँ उसने अठारह महीने तक सेवकाई की। सीलास और तीमुथियुस कुरिन्थुस में पौलुस से मिले और उसे थिस्सलुनीका की नई कलीसिया की ख़बर दी।

पौलुस ने सीलास और तीमुथियुस की ख़बर के जवाब में 1 थिस्सलुनिकियों लिखा। उसने संभवतः इस पत्र को तीमुथियुस के हाथ थिस्सलुनीका भेजा होगा। कुछ महीने बाद, आगे की ख़बर के जवाब में, उसने 2 थिस्सलुनीकियों लिखा। ये दो पत्र तब के हैं, जब पौलुस 50-51 ईसा पश्चात में कुरिन्थुस में था। ये उसके शुरुआती पत्रों में से हैं जो गलातियों के पहले के हैं।

1 थिस्सलुनीकियों: मसीह वापस आयेगा।

उद्देश्य

जब तीमुथियुस कुरिन्थुस में आया तब थिस्सलुनीका की कलीसिया के विषय में उसकी ख़बर सकारात्मक थी। ये नए विश्वासी सुसमाचार के प्रति विश्वासयोग्य थे। पौलुस उन्हें उनके विश्वास में प्रोत्साहित करने के लिए लिखता हैं और कलीसिया के बीच उत्पन्न हुए एक प्रश्न को संबोधित करने के लिए भी लिखता है। कलीसिया के कुछ सदस्यों की मृत्यु हो गई थी, जिससे प्रभु की वापसी के बारे में सवाल उठे। कुछ मसीहियों को यह डर था कि जो लोग मर गए हैं, कहीं उन्होंने मसीह के वापस आने के वादे के अवसर को खो न दिया हो। सताव को सहन करने वाले मसीहियों के लिए, यह सोचना निराशाजनक था कि उनकी विश्वासयोग्यता व्यर्थ ठहर सकती है। पौलुस थिस्सलुनीकियों को सताव की स्थिति में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने और उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिए लिखता है कि मसीह उन दोनों के लिए वापस आ जाएगा जो विश्वास में मरते हैं और उन लोगों के लिए जो उसके आने के समय जीवित होगें।

विषय वस्तु

► क्या दूसरी वापसी से डर उत्पन्न होता है या आशा उत्पन्न होती है? दूसरी वापसी का सिद्धांत आपके दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

थिस्सलुनीका में पौलुस की सेवकाई के तुरंत बाद लिखा गया, यह पत्र बहुत ही व्यक्तिगत है। जबकि पौलुस व्यक्तियों का नाम नहीं लेता, फिर भी वह इस

पौलुस निर्देश देने से भी अधिक करता है, वह इन नये विश्वासी लोगों के लिए प्रार्थना करता है, जिनके साथ वह बहुत ही घनिष्ठ संबंध महसूस करता है। 1 थिस्सलुनीकियों में दो प्रार्थनाएं उसकी चिंता से संबंधित हैं कि वे मसीह के आने तक सावधानी से जीयें। 3:11-13 में, पौलुस यह प्रार्थना करता है कि ये विश्वासी यीशु के आने की तैयारी में प्रेम और पवित्रता में बढ़ते रहें।

फिर 5:23-24 में, पौलुस प्रार्थना करता है कि जिस परमेश्वर ने खुद का इन विश्वासियों (''शांति का परमेश्वर'') के साथ मेल मिलाप किया है, वह ''तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करेगा'' (या पूर्ण रूप से)। इससे यह सुनिश्चित होगा कि उनका पूरा अस्तित्व (''आत्मा, प्राण और शरीर'') ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के लिए'' तैयार होगा। एक अंतिम प्रोत्साहन में, पौलुस ने अपने पाठकों को आश्वासन दिया कि यह पवित्रता परमेश्वर के कार्य से आती है, न कि हमारी अपनी सामर्थ से। जो हमें पवित्रता में बुलाता है, वही हमें पवित्र बनाता है।

2 थिस्सलुनीकियों: मसीह की वापसी के बारे में गलतफहमी

विषय वस्तु और उद्देश्य

1 थिस्सलुनीकियों के पत्र को भेजने के कुछ ही समय बाद, पौलुस को प्रभु की दूसरी वापसी के विषय में अन्य सवालों का पता चला। 2 थिस्सलुनीकियों में, पौलुस इन सवालों का जवाब देता है और फिर से थिस्सलुनीकियों को मसीह की वापसी के लिए तैयारी में विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करता है। 2 थिस्सलुनीकियों में पौलुस 1 थिस्सलुनीकियों की अपनी शिक्षा को और अधिक स्पष्ट करता है। पौलुस प्रभु की वापसी के विषय में भ्रम और विश्वासियों के बीच गलत व्यवहार को संबोधित करता है।

प्रभु के दिन को समझना (2 थिस्सलुनीकियों 1-2)

1 थिस्सलुनीकियों में, पौलुस ने कहा कि हमें विश्वासियों की मृत्यु पर निराशा होने की आवश्यकता नहीं है; मसीह जीवित और मृत दोनों के लिए वापस आएगा। उनके बढ़ते विश्वास और प्रेम के लिए धन्यवाद के एक छोटे से अभिवादन और अभिव्यक्ति के बाद, 2 थिस्सलुनीकियों में पौलुस मसीह की वापसी के बारे में और निर्देश देता है। पौलुस लिखता है कि दूसरी वापसी से दंड और ''अनंत विनाश'' का समय आयेगा। परन्तु विश्वासियों को डरने की जरूरत नहीं है। न्याय का दिन वह दिन भी होगा जब मसीह ''अपने पवित्र लोगों में महिमा पायेगा।''[287]

[287] 2 थिस्सलुनीकियों 1:9-10।

- एक सैनिक अपने भर्ती करने वाले के प्रति विश्वासयोग्य रहता है (2 तीमुथियुस 2:3-4)।
- एक खिलाड़ी नियमों के अनुसार मुकाबला करता है (2 तीमुथियुस 2:5)।
- एक किसान दिखाता है कि विश्वासयोग्य रहने का परिणाम भविष्य में इनाम मिलते हैं (2 तीमुथियुस 2:6)।

झूठे शिक्षक

झूठी शिक्षा का खतरा पौलुस के लिए एक वास्तविक चिंता बनी हुई है। वह तीमुथियुस से विनती करना है कि वह विश्वासयोग्य बना रहे और ''मूर्खतापूर्ण और अविद्या के विवादों'' से दूर रहे। ये ''दुष्ट और बहकानेवाले'' मनुष्यों की ओर से आते हैं जो ''धोखा देते हैं और धोखा खाते हैं।''[320] बल्कि, तीमुथियुस को ''इन बातों पर जो तूने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह...''[321] उसे ''वचन का प्रचार'' करना चाहिए, उसे ''उलाहना देना, फटकारना और समझाना'' चाहिए, उसे ''सब बातों में सावधान रहना, दुख उठाना, सुसमाचार प्रचार का काम करना चाहिए'', संक्षेप में, उसे ''अपनी सेवा को पूरा करना चाहिए।''[322] यहाँ, 1 तीमुथियुस और तीतुस की तरह, झूठी शिक्षा का जवाब सत्य के प्रति विश्वासयोग्यता है।

अंतिम अभिवादन

2 तीमुथियुस सांसारिक जीवन और सेवकाई के लिए पौलुस का अंतिम अभिवादन है। परन्तु पौलुस भविष्य का सामना आत्मविश्वास के साथ करता है, वह विश्वासयोग्य रहने के इनाम की बाट जोहता है।

वर्षों पहले, पौलुस ने यह गवाही दी, ''परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूं, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवाकाई को पूरी करूं, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।''[323] अब मृत्यु का सामना करते हुए वह यह गवाही देता है, ''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की

---

[320] 2 तीमुथियुस 2:23, 3:13-14।

[321] 2 तिमुथियुस 3:14।

[322] 2 तीमुथियुस 4:2,5।

[323] प्रेरितों के काम 20: 24।

रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।''[324]

आज की कलीसियाओं में पासबानी पत्रियों

पासबानी की पत्रियां **सच्चे सिद्धांत के महत्व** को सिखाती हैं। झूठी शिक्षा के लिए सबसे प्रभावी उत्तर सत्य है। इन पत्रों में, पौलुस झूठी शिक्षा की तुलना में सच्चे सिद्धांत पर अधिक ध्यान देता है। उसी तरह, आज झूठे सिद्धांत के लिए हमारा सबसे प्रभावी जवाब सुसमाचार है ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।''[325]

एक ऐसे समय में, जिसमें नैतिक विफलता और झूठी शिक्षा ने कुछ कलीसियाओं के अगुओं को भ्रष्ट कर दिया है, इसलिए **कलीसिया के अगुओं को योग्यताओं** के विषय में बताने के लिए पासबानी पत्रियां बहुत मूल्य रखती हैं। कोई भी कलीसिया इन मानकों/योग्यताओं की अनदेखी नहीं कर सकती। बुद्धिमान कलीसियाएं ऐसे अगुओं का चयन करेंगी जो 1 तीमुथियुस और तीतुस में पौलुस द्वारा बताए गये गुणों के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं।

तीतुस **सुसमाचार के प्रदर्शन के तौर पर अच्छे कार्यों के महत्व** के विषय में बताता है। कभी-कभी मसीहियों की जीवनशैली के वजह से कलीसिया की गवाही को नुकसान पहुंचा है। विश्वासियों को सुसमाचार को अविश्वासियों के लिए आकर्षक बनाना चाहिए। सच्चे सिद्धांत से सही व्यवहार उत्पन्न होना चाहिए।

पौलुस के समापन शब्द **सदा के लिए विश्वासयोग्य बने रहने के लिए कहते हैं।** छात्रों, जब आप सेवकाई में बने रहते हैं तब आप चुनौतियों का सामना करते हैं। पौलुस की ही तरह, आपको आपके सहकर्मी छोड़ सकते हैं। तीमुथियुस और तीतुस की तरह, आपको झूठे शिक्षकों का सामना करना पड़ सकता है। और, सब समयों के विश्वासियों की तरह, आपको परीक्षा और विरोध का सामना करना पड़ेगा। पौलुस के समापन के शब्द आपको यह याद दिलाते हैं कि इनाम आपके द्वारा चुकाई जाने वाली कीमत के योग्य है। हार न मानना, आपका मुकुट आपका इंतज़ार कर रहा है।

---

324 2 तीमुथियुस 4:7-8।

325 यहूदा 1:3।

पाठ 9 के परीक्षा प्रश्न

(1) पासबानी के पत्रों की सबसे संभावित तारीख क्या है?

(2) एक तरीके की पहचान करें जो पौलुस को 2 तीमुथियुस और तीतुस की विषय वस्तु के लेखक के रूप में दर्शाता है।

(3) 1 तीमुथियुस लिखने के लिए पौलुस का क्या उद्देश्य था?

(4) झूठे शिक्षकों का सामना करने पर पौलुस की गवाही तीमुथियुस को किस प्रकार प्रोत्साहित करती है?

(5) प्रारंभिक कलीसिया के दो कार्यालयों को सूचीबद्ध और परिभाषित करें।

(6) तितुस का पौलुस के साथ क्या संबंध था?

(7) तीतुस को पत्री लिखने का पौलुस का उद्देश्य क्या था?

(8) अच्छे कामों की वे दो प्रेरणाएं क्या हैं जो पौलुस तीतुस को देता है?

(9) युहन्ना मरकुस का अनुभव 2 तीमुथियुस में पौलुस के सत्य के संदेश के साथ कैसे सही बैठता है?

(10) उन चार तरीकों को सूचीबद्ध करें जिनके द्वारा पासबानी पत्र आज कलीसिया से बात करते हैं।

पाठ 10

इब्रानियों और याकूबः

सामान्य प्रत्रियां, भाग 1

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में छात्रः

(1) इब्रानियों और याकूब की संभावित तारीख और ऐतिहासिक स्थान को जानें।

(2) इब्रानियों और याकूब के प्राथमिक विषयों और उद्देश्यों का संक्षेप दें।

(3) विश्वास को त्यागने के खिलाफ बाइबल की चेतावनी पर ध्यान दें।

(4) नई वाचा के तहत हमारे विशेषाधिकारों और ज़िम्मेदारियों की सराहना करें।

(5) मसीही जीवन में विश्वास और कार्यों के बीच संबंध को समझें।

(6) इब्रानियों और याकूब के व्यावहारिक सिद्धांतों को मसीह जीवन में लागू करें।

(7) इन पुस्तकों के संदेश को आज की दुनिया की ज़रूरतों से जोड़ें।

पाठ

इब्रानियों और याकूब पढ़ें।

इब्रानियों 4:14-16 और याकूब 2:17-18 को याद करें।

नये नीयम की पुस्तकों को, इब्रानियों से लेकर यहूदा तक, सामान्य पत्रियां कहते हैं।[326] पौलुस के अधिकांश पत्रों के विपरीत, ये पत्र या तो उन लोगों को संबोधित करते हैं जो किसी खास समूह के नहीं हैं और या तो उन लोगों को जिनके बारे में हम बहुत कम जानते हैं।

इन पत्रों में लंबे और छोटे दोनों पत्र शामिल हैं जैसे, इब्रानियों को लिखा गया पत्र, जो एक लंबी पत्री है और प्रेरित यूहन्ना द्वारा गयूस को लिखा गया एक छोटा पत्र। सामान्य पत्र विभिन्न समस्याओं को संबोधित करते हैं, परन्तु सभी पुस्तकों

[326] इन पत्रों को कभी-कभी ''कैथोलिक पत्रियां'' भी कहा जाता है। इस संदर्भ में, ''कैथोलिक'' शब्द ''सामान्य'' शब्द का समानार्थक शब्द है। यह रोमन कैथोलिक कलीसिया को संदर्भित नहीं करता। इसका उपयोग प्रेरितों के विश्वास में उपयोग शब्दों जैसा हैः ''हम पवित्र कैथोलिक कलीसिया में, पवित्र लोगों की समन्वय में विश्वास करते हैं...''

में आम व्यवहारिक मसीही जीवन पर ज़ोर दिया गया है। ये किताबें हमें सिखाती हैं कि एक गैर-मसीही दुनिया में मसीहियों के समान कैसे रहना है। पहली सदी के मसीहियों ने आज हमारे सामने आने वाली चुनौतियों के समान चुनौतियों का सामना किया जैसेः झूठी शिक्षा, परीक्षा, और अविश्वासियों का विरोध। इन मुद्दों में से प्रत्येक को इन पत्रों में संबोधित किया गया है। यद्यपि ये पत्र आकार में छोटे हैं, परन्तु ये पत्र विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो अपने विश्वास के कारण चुनौतियों का सामना करते हैं।

इब्रानियों को लिखा गया पत्रः एक बेहतर मार्ग

लेखक

इब्रानियों की पुस्तक इसके लेखक के विषय में कोई वर्णन नहीं है। पौलुस को अक्सर इसका लेखक माना जाता है।

पौलुस को इसका लेखक मानने के पक्ष में ये तर्क शामिल हैंः

1. पौलुस की पत्रियों में मसीह के व्यक्तित्व और कार्यों के विषय में इब्रानियों की पत्री का विवरण आम है।
2. लेखक तीमुथियुस से संबंधित है।[327]
3. अंतिम अध्याय में आशीष की प्रार्थना पौलुस से मिलती जुलती है।[328]

पौलुस के लेखक होने के खिलाफ तर्क में इब्रानियों और अन्य पत्रों के बीच लेखनों में कई अंतर शामिल हैंः

1. इब्रानियों की पत्री कभी भी ''यीशु मसीह'' वाक्यांश का उपयोग नहीं करती। यह एक ऐसा वाक्यांश जो पौलुस के पत्रों में पचास से अधिक बार उपयोग किया गया।
2. इब्रानियों 2:3 में, लेखक कहता है कि उसने प्रेरितों से सुसमाचार सुना। गलातियों 1:12 में, पौलुस इस बात पर ज़ोर देता है कि उसने यीशु मसीह के सीधे प्रकट होने से सुसमाचार सुना।
3. पौलुस के अन्य पत्रों के विपरीत, इब्रानियों की पत्री किसी अभिवादन से शुरू नहीं होती और व्यक्तिगत अभिवादनों की सूची के साथ समाप्त नहीं होती।

---

[327] इब्रानियों 13:23।

[328] इब्रानियों 13:18-25.

कलीसिया के पूरे इतिहास में, कई अन्य लेखकों को प्रस्तावित किया गया है। अधिकांश प्रस्तावित लेखक पौलुस के सहयोगी हैं, जैसे कि बरनबास, लूका या अपुल्लोस। इसके कारण, यह संभव है कि उनके लेखन का तरीका पौलुस के समान हो। अंततः, इस पत्री का लेखक अज्ञात है।

उद्देश्य

इब्रानियों की पुस्तक एक धर्मोपदेश (पुराने नियम के लेखों का विस्तार) की विशेषताओं के साथ एक पत्र के तत्वों (अंत में व्यक्तिगत अभिवादन) को जोड़ती है। लेखक अपने पत्र को ''उपदेश के वचन'' के रूप में संदर्भित करता है, [329]जो उपदेश (प्रचार) का वर्णन करने के लिए प्रेरितों के काम 13:15 में इस्तेमाल किया गया एक वाक्यांश है। इब्रानियों का सबसे अच्छा वर्णन एक ''उपदेशात्मक पत्र'' होगा जो एक पत्र के रूप में एक उपदेश है।

इस पत्री के पहले प्राप्तकर्ता यहूदी मसीही हैं जो मसीह में अपने विश्वास को त्यागकर अपनी पूर्व प्रथाओं में वापस जाना चाहते हैं। उनकी यहूदी पृष्ठभूमि को पुराने नियम के बलिदानों और अनुष्ठानों के विषय में उनके ज्ञान में देखा जाता है।

इन मसीहियों ने अपनी विश्ववासयोग्यता कारण बड़े सताव को सहा है परन्तु अब वे ''निराश होकर हियाव छोड़ने'' के खतरे में हैं।[330] इब्रानियों का लेखक इन विश्वासियों को विश्वास को त्यागने के खिलाफ चेतावनी देने के लिए और उन्हें विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इस पत्री को लिखता है। बार-बार वह उन्हें याद दिलाता है कि यीशु का व्यक्तित्व और पुराने नियम के याजकों और बलिदानों की व्यवस्था से बेहतर है।

तारीख

इब्रानियों को लिखे पत्र को संभवता 70 ईसा पश्चात से पहले लिखा गया होगा। यह पत्र एक वर्तमान वास्तविकता के तौर पर यहूदी बलिदान प्रणाली का वर्णन करता है।[331] इसका यह अर्थ है कि इस पत्र को 70 ईसा पश्चात में रोमियों द्वारा मंदिर के विनाश से पहले लिखा गया होगा।

---

[329] इब्रानियों 13:22।

[330] इब्रानियों 10:32-34; 12:3।

[331] इब्रानियों 8:3-5; 9:7-8; 10:1-3।

इब्रानियों में पुराना नियम

► पुरानी वाचा और नई वाचा के बीच क्या संबंध है?

इब्रानियों की विषय वस्तु को देखने से पहले, इस पुस्तक के बारे में एक सामान्य गलतफहमी का जवाब देना महत्वपूर्ण है। कई पाठक इस पुस्तक की इस प्रकार व्याख्या करते हैं कि यह पुस्तक पुराने नियम की निंदा करती है। क्योंकि इब्रानियों यह बताती है कि नई वाचा ''बेहतर'' वाचा है, इसलिए कुछ लोग मानते हैं कि पुरानी वाचा अपने उद्देश्य में विफल रही है।

परन्तु, इब्रानियों की पुस्तक पुराने नियम के लिए बहुत सम्मान व्यक्त करती है।

- इब्रानियों 11 में ''महान पुरुष'' पुराने नियम के चरित्र हैं।
- इब्रानियों की शिक्षाएं पुराने नियम के वचनों पर आधारित हैं।[332] उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1 में चौदह पद हैं। उन में से, नौ पद पुराने नियम से प्रत्यक्ष उद्धरण हैं, जिनमें ये वचन शामिल हैं: भजन 2; 2 शमूएल 7:14; व्यवस्थाविवरण 32:43; भजन संहिता 104:4; भजन संहिता 45:6,7; यशायाह 61:1,3; भजन संहिता 102:25-27 और भजन संहिता 110:1।

इब्रानियों की पत्री यह नहीं सिखाती कि पुरानी वाचा की विफलता के कारण परमेश्वर को अपनी योजना बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा। बल्कि, मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार ''दुनिया की उत्पत्ति से पहले ही पूर्व निर्धारित था।''[333] यहां तक कि पुराने नियम में भी, उद्धार विश्वास करने से परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा मिलता था, बाहरी अनुष्ठानों द्वारा नहीं। इब्रानियों 11 में भी हम देखते हैं कि, ''विश्वास के माध्यम से ही'' पुराने नियम के महापुरुषों ने परमेश्वर को प्रसन्न किया।

पुराने नियम और नए नियम के बीच एक स्पष्ट निरंतरता है। मसीह में पुराने नियम के वादे और नियम पूरे हुए। पुराने नियम में समस्या इस्राएलियों की विफलता थी, परमेश्वर के उद्देश्य की विफलता नहीं। इस्राएली हृदय से वाचा का पालन करने में विफल रहे।[334] उन्होंने विश्वास पर अधारित बलिदान की प्रणाली को व्यर्थ अनुष्ठानों में परिवर्तित कर दिया। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और यीशु दोनों ने इस्राएल के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्य के दुरुपयोग किये जाने को गलत ठहराया।

---

[332] इब्रानियों की पुस्तक को एक अध्ययन बाइबल में पढ़ने से आपको बहुत लाभ होगा, जो इब्रानियों में उद्धृत पुराने नियम के वचनों को दर्शाती है।

[333] 1 पतरस 1:20।

[334] इब्रानियों 8:8।

दुनिया की उत्पत्ति से ही, पुरानी वाचा ने मसीह के आने की ओर इशारा किया। पुरानी वाचा कभी भी अपने आप में पूर्ण नहीं थी; इसने भविष्य में होने वाली पूर्ति की ओर इशारा किया। यह पूर्ति यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में देखी जाती है। नई वाचा ''बेहतर'' है क्योंकि यह अधूरी पुरानी वाचा का वादा पूरा करती है।

विषय वस्तु

इब्रानियों की पुस्तक दो समानांतर विषयों के विषय में बताती है। पहला विषय *(एक बेहतर मार्ग)* मसीह में जीवन के विशेषाधिकारों की तुलना पुरानी वाचा के तहत उपलब्ध कम विशेषाधिकारों से करता है।

दूसरा विषय *(सावधान रहो)* उन लोगों को पाँच ''चेतावनियों'' की एक श्रृंखला में देखा जाता है जो अपने विश्वास को त्यागकर पुराने जीवन में लौटना चाहते हैं। प्रत्येक चेतावनी के अनुभाग में, इब्रानियों की पत्री चेतावनी देती है और फिर पाठक को प्रोत्साहन देती है।

एक बेहतर मार्ग

तुलना की एक श्रृंखला में, इब्रानियों की पुस्तक यह दर्शाती है किः

- मसीह पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ है (1:1-3)।
- मसीह स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है (1:4-14)।
- मसीह स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है जिसके अधिकार में पूरी दुनिया को किया गया है (2:4-18)।
- मसीह मूसा से श्रेष्ठ है, जो परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक और इस्राएल का अगुआ थ (3:1-6)।
- मसीह हारून और उच्च याजकपद से श्रेष्ठ है (4:14-7:28)।
- मसीह ने एक श्रेष्ठ वाचा प्रदान की है (8:1-13)।
- मसीह ने एक श्रेष्ठ बलिदान दिया है (9:1-18)।

इब्रानियों की पत्री पुराने नियम के *अच्छे* वादों और मसीह के माध्यम से हमारी *बेहतर* पूर्ति के बीच अंतरों की एक श्रृंखला को दिखाती है। यहूदी मसीहियों के लिए पुरानी वाचा में लौटना मूर्खतापूर्ण होगा! यदि यहूदी मसीही पूर्णता का स्वाद

चखने और ''पवित्र आत्मा के'' भागी होकर पुराने जीवन में वापस लौटते हैं, ''तो वे परमेश्वर के पुत्र को फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं।''[335]

सावधान रहो

► विश्वासत्याग क्या है? क्या एक सच्चे विश्वासी के लिए अपना विश्वास त्यागना संभव है?

मसीह द्वारा प्रदान किये गये बेहतर मार्ग की गवाहियों के साथ-साथ, इब्रानियों की पत्री उन लोगों को चेतावनी देती है जो अपना विश्वास त्यागना चाहते हैं। अधिक विशेषाधिकार से, अधिक ज़िम्मेदारी आती है। इस ज़िम्मेदारी के प्रकाश में, इब्रानियों की पत्री उन विश्वासियों को पाँच गंभीर चेतावनियां देती है जिन्होंने नई वाचा की अच्छी वस्तुओं का स्वाद चखा है और पुरानी वाचा में लौटना चाहते हैं।

प्रत्येक चेतावनी विश्वासयोग्यता के प्रोत्साहन के साथ है। जबकि इब्रानियों की पत्री यह बताती है कि विश्वासत्याग संभव है, फिर भी यह कभी नहीं बताती कि विश्वासत्याग टाला जा सकता है। प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर की योजना विश्वासयोग्य जीवन है। इब्रानियों की पत्री बताती है कि विजयी जीवन हर मसीही के लिए उपलब्ध है।

चेतावनी 1 - इब्रानियों 2:1-18[336]

- हमने जो संदेश सुना है, उससे भटकने के खिलाफ हमें चेताया जाता है। (2:1)
- यह चेतावनी उस महान विशेषाधिकार के कारण बहुत गंभीर है, जिसे हमने प्राप्त किया है। (2:2-3)
- हमें यीशु के उदाहरण के द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है, जो परीक्षा में पड़ा और उन सब को सामर्थ देता है, जो परीक्षा में पड़ते हैं। (2:18)

चेतावनी 2 - इब्रानियों 3:12-4:16

- हमें चेताया जाता है कि हम ''पाप के छल में आकर कठोर न बने।'' (3:12-13)

---

[335] इब्रानियों 6:4-6।

[336] यह रूपरेखा Walter Elwell and Robert Yarbrough, *Encountering the New Testament (नए नियम से मुलाकात),* Baker Academic, 2005 से ली गयी है।

- यह चेतावनी इसलिए गंभीर है क्योंकि ''जीवित परमेश्वर से अलग हो जाना'' संभव है। क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, *यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।''* (3:12-14)

- हमें इस वचन से प्रोत्साहन मिलता है कि यीशु हमारा महायाजक है जसके माध्यम से हम ''आवश्यकता के समय उद्धार पा सकते हैं।'' (4:14-16)

चेतावनी 3 - इब्रानियों 5:11-6:12

- हमें ''मरे हुए कामों'' में वापस जाने के खिलाफ चेतावनी दी जाती है। (5:11-6:6)

- यह चेतावनी गंभीर है विश्वासत्याग के पलटे जाने की असंभावना के कारण। (6:4-6)

- हमें यह जानने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि सभी विश्वासयोग्य जन ''प्रतिज्ञाओं के वारिस'' होंगे। (6:9-12)

चेतावनी 4 - इब्रानियों 10:26-39

- हमें चेताया जाता है कि ''यदि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद हम जानबूझकर पाप करते रहें'' तो केवल दंड होगा। (10:26-27)

- यह चेतावनी नई वाचा के विशेषाधिकारों के कारण गंभीर है। यदि मूसा की व्यवस्था को नज़रअंदाज़ करनेवालों को बुरी तरह से दंड दिया जाता था, तो ''हमें कितनी बुरी'' सज़ा मिलेगी, यदि हम ''परमेश्वर के पुत्र को अपने पैरों तले रोंदेंगे''। इस चेतावनी को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि ''जीविते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।'' (10:28-31)

- हमें इसलिए प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि हम ''प्राण बचाने में विश्वास रखते है।'' पीछे मुड़ना संभव है *परन्तु दृढ़ रहना भी संभव है।* हमें विश्वासी को दृढ़ बनाये रखने वाली परमेश्वर की सामर्थ में पूर्ण विश्वास है। हम विश्वास की संभावना को इब्रानियों 11 के वचन ''विश्वास के वचनों'' में देखते हैं (10:32-39)।

- हमें चेताया जाता है कि हमें जो संदेश मिला है, उसे मानने से इनकार न करें (12:25)।
- नई वाचा के विशेषाधिकारों के कारण यह चेतावनी गंभीर है। (12:25-27)
- हमें प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि हम ''परमेश्वर की स्वीकार्य रुप से सेवा करते है'' उसके अनुग्रह के कारण। (12:28-29)

विश्वासत्याग

विश्वासत्याग क्या है?

विश्वासत्याग शब्द को ''उस विश्वास को जानबूझकर त्याग या छोड़ देना जिसे किसी ने स्वीकार किया हो'' के रूप में परिभाषित किया गया है।[337] यह परिभाषा विश्वासत्याग के तीन तत्वों पर ज़ोर देती है:

1. *यह जानबूझकर किया जाता है।* शिक्षा को लेकर संदेह, स्वयं के उद्धार के बारे में अनिश्चितता या पाप में पड़ने से विश्वासत्याग नहीं होता। विश्वासत्याग मसीही विश्वास को स्वेच्छा से त्याग देना है।
2. *यह ''विश्वास को त्याग या छोड़ देना है।''* यह पाप से भी बढ़कर है, यह मसीहत के सत्य का त्याग है। इब्रानियों के लिए, यह यीशु के प्रायश्चित के कार्य को त्यागकर पूर्व-मसीह रीति-रिवाज़ों में वापस लौटना था।[338] जुडाइज़रों ने मसीह के प्रायश्चित कार्य में आवश्यकताओं को जोड़ा; विश्वासत्यागियों ने पूरी तरह से मसीह के प्रायश्चित कार्य को त्याग दिया।
3. *यह उस विश्वास का त्याग है कि जिसे ''किसी ने स्वीकार किया हो।''* विश्वसत्याग उस व्यक्ति के अविश्वास से अलग है जिसने कभी मसीह के विषय में नहीं जाना। यह उस व्यक्ति द्वारा विश्वास का त्याग है, जो ''परमेश्वर के उत्तम वचन का और आने वाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुका है।''[339]

विश्वसत्याग और पीछे हटने में क्या अंतर है?

इब्रानियों में विश्वासत्याग पीछे हटने की तुलना में विश्वास का अधिक स्थायी और जागरूक त्याग है। पतरस ने यीशु का इनकार किया लेकिन फिर अपने पाप का पश्चाताप किया। पतरस का साहस विफल हुआ परन्तु उसने मसीही विश्वास को नहीं त्यागा। उसका पीछे हटना डर का परिणाम था, न कि मसीह का त्याग।

---

[337] L.G. Whitlock, ''Apostasy'' (विश्वासत्याग) *Evangelical Dictionary of Theology* में है।

[338] इब्रानियों 6:6।

[339] इब्रानियों 6:5।

ऐसा हो सकता है कि पीछे हटनेवाला व्यक्ति पाप में पड़कर भी मसीही विश्वास के सत्य को न त्यागे। हालांकि इसके विपरीत, एक विश्वासत्यागी व्यक्ति मसीही विश्वास के सत्य को त्याग देता है।

इब्रानियों में कुछ चेतावनियाँ पीछे हटने और लापरवाही से संबंधित हैं। परन्तु मसीही विश्वास का पूर्ण रूप से त्याग इब्रानियों 6:4-6 के पीछे का विचार है। जब कोई विश्वासत्यागी व्यक्ति यीशु की बचाने वाली मृत्यु को त्याग देता है, वह अपने छुटकारे के मार्ग को नष्ट कर देता है। हालाँकि, पश्चाताप करने वाला पीछे हटनेवाला व्यक्ति यीशु की प्रायश्चित मृत्यु के माध्यम से फिर बहाल हो सकता है।

क्या एक सच्चे मसीही के लिए विश्वासत्याग करना संभव है?

कुछ मसीहियों का तर्क है कि एक सच्चे मसीही के लिए विश्वासत्याग करना असंभव है। हालांकि, इब्रानियों की चेतावनियों का केवल तभी अर्थ निकलता है जब लेखक एक वास्तविक खतरे को संबोधित कर रहा हो। इब्रानियों 6:4-6 का यह अर्थ है कि स्थायी और पूर्ण विश्वासत्याग संभव है।

आज की कलीसिया में इब्रानियों की पत्री

इब्रानियों की पत्री **विश्वासत्याग के वास्तविक खतरे** के खिलाफ चेतावनी देती है। आम पत्रियों का एक सामान्य विषय कलीसिया के खतरे के विषय में है। अक्सर यह चेतावनी विरुध मतों के खिलाफ होती है जो मसीही शिक्षा को विकृत करते हैं। इब्रानियों में, चेतावनी मसीही विश्वास के पूर्ण परित्याग के खिलाफ है। यह खतरा आज भी उतना ही वास्तविक है जितना पहली सदी में था।

हां, इब्रानियों की पत्री बताती है, ऐसा संभव है कि हम अपने विश्वास को त्याग सकते

''हम संकरे मार्ग पर
यात्रा करने वाले तीर्थयात्री हैं
और जो लोग इस मार्ग में हमसे पहले गए हैं वे पहले होंगे
विश्वास करने वालों का मनोबल बढ़ाते हुए और थके हुओं को प्रोत्साहित करते हुए
उनका जीवन परमेश्वर की निरंतर कृपा का सरगर्मी प्रमाण है
जो गवाहों के एक बड़े बादल से घिरा हुआ है
हम न केवल पुरस्कार के लिए दौड़ें
बल्कि उनके समान दौड़ें जो हमसे पहले गये हैं
हम अपने पीछे आनेवाले लोगों के लिए
विश्वास की उस विरासत को छोड़ें, जो हमें धर्मी लोगों के जीवन से मिली है
हे, हमारे पीछे आने वाले सभी लोग हमें विश्वासयोग्य पायें
हमारी भक्ति की आग उनके रास्ते को रोशन करे
जो पदचिह्न छोड़ दें
वे उन्हें विश्वास करने के लिए प्रेरित करें
और हम जो जीवन जीते हैं, वह उन्हें आज्ञा मानने के लिए प्रेरित करे।
हे, हमारे पीछे आने वाले सभी लोग हमें विश्वासयोग्य पायें।''
- जॉन मोहर द्वारा गीत

हैं। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात, इब्रानियों की पत्री **विश्वासयोग्यता की संभावना** के विषय में बताती है। हमारे पास यह बड़ा लाभ है कि मसीह हमारे लिए विनती करता है। अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें, एक दूसरे को प्रेम और अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करके और एक साथ अराधना की संगति करने से एक दूसरे को प्रोत्साहित करके, हम विश्वासयोग्य हो सकते हैं।[340] इब्रानियों की पुस्तक का चरमोत्कर्ष अध्याय 11 उन लोगों की गवाही के साथ है जो विश्वास के माध्यम से विश्वासयोग्य थे और जो अब उन सब लोगों के लिए गवाहों के बादल का घेरा प्रदान करते हैं, जो ''धीरज से अपनी दौड़ को दौड़ते हैं''[341]

याकूब: विश्वास जो कार्य करता है

लेखक और तारीख

इस पत्र का लेखक ''याकूब, परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का सेवक था।''[342] याकूब, यीशु का सौतेला भाई, यीशु के जीवनकाल के समय संदेह में था, परन्तु अब उसे पुनरुत्थान में पूर्ण विश्वास था।[343] वह 62 ईसा पश्चात में विश्वास के कारण शहीद हो गया।

यह पत्र संभवतः 40 ईसा पश्चात की शुरुआत में या इसके मध्य में लिखा गया होगा। चूंकि याकूब यरूशलेम की महासभा में एक अधिकारी था जिसने विश्वास और कार्यों के मुद्दे पर बहस की थी, इसलिए यह संभावना है कि याकूब ने इस महासभा का उल्लेख किया होगा यदि यह पत्र 49 ईसा पश्चात के बाद लिखा हो।[344]

लोग और उद्देश्य

याकूब ने यह पत्र उन ''बारह गोत्रों को लिखा, जो दूर देशों मे तित्तर बित्तर होकर रहते थे।''[345] इस शब्द (*प्रवासी*) का उपयोग पहले उन यहूदियों के लिए किया गया, जो 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन के बाद तितर बितर हो गये थे। याकूब ने इस शब्द का उपयोग उन यहूदी मसीहियों के लिए किया, जो

---

[340] इब्रानियों 10:23-25।

[341] इब्रानियों 12:1।

[342] याकूब 1:1।

[343] मत्ती 13:55; यूहन्ना 7:3-5; 1 कुरिन्थियों 15:7।

[344] प्रेरितों के काम 15।

[345] याकूब 1:1।

यरूशलेम के बाहर रहते थे। याकूब द्वारा पुराने नियम के बार-बार संदर्भों के उपयोग से पता चलता है कि जिन लोगों को उसने यह पत्र लिखा, वे सताये जाने वाले यहूदी मसीही थे। उन्हें एक दूसरे के साथ और एक सांसारिक जीवन शैली जीने के परीक्षा का सामना करना पड़ा। याकूब ने विश्वासियों को यह याद दिलाने के लिए लिखा कि उनके कामों में उनका विश्वास दिखना चाहिए। विश्वासियों का विश्वास उनके कार्यों में दिखना चाहिए।

विषय वस्तु

याकूब और पुराना नियम

भविष्यवक्ता *आमोस* की तरह, याकूब यह दर्शाता है कि हमारे विश्वास से हमारा दैनिक जीवन प्रभावित होना चाहिए। आमोस और याकूब दोनों इसी बात पर ज़ोर देते हैं कि हमारा सच्चा विश्वास उस बात में दिखेगा कि हम दूसरों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं। 108 पदों में, याकूब पचास से अधिक आज्ञाएं देता है। यह एक व्यावहारिक पत्र है।

► याकूब 5:1-5 को आमोस 4:1-2 और 5:21-24 के साथ पढ़ें। इन संदेशों की आप कैसे तुलना कर सकते हैं?

नीतिवचन की तरह, याकूब उन छोटे-छोटे कथनों का इस्तेमाल करता है जो महत्वपूर्ण सच्चाइयों को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं। याकूब के कई विषय नीतिवचन की पुस्तक के विषयों के समानांतर हैं जैसेः जीभ, धन, क्रोध और बुद्धी।

पुराने नियम की व्यवस्था की तरह, याकूब यह बताता है कि पवित्र व्यक्ति पवित्र परमेश्वर के चरित्र को कैसे दर्शाता है। लैव्यवस्था 19 की ठ पवित्रता का नियमसंग्रह ठ बताता है कि पवित्र लोगों को पवित्र परमेश्वर की आज्ञाकारिता में कैसे चलना है। इसी तरह, याकूब बताता है कि नए नियम के विश्वासियों को परमेश्वर की आज्ञाकारिता में कैसे चलना है। दोनों यह बताते हैं कि हम जिस विश्वास के साथ जीते हैं, वह विश्वास हमारे जीवन में अवश्य दिखना चाहिए।

पवित्रता का नियमसंग्रह और याकूब	
लैव्यवस्था 19	**याकूब**
19:13 ''और मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास सारी रात बिहान तक न रहने पाए''	**5:4** ''जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उन की वह मज़दूरी जो तुम ने धोखा देकर रख ली है चिल्ला रही है''

19:15 ''न तो कंगाल का पक्ष करना और न बड़े मनुष्यों का मुंह देखा विचार करना''	**2:9** ''पर यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप करते हा''
19:18 ''पलटा न लेना और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना''	**5:9** ''हे भाइयों, एक दूसरे पर दोष न लगाओ''
19:18 ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख''	**2:8** ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख''

विश्वास और कार्य

मार्टिन लूथर ने कार्यों पर ज़ोर देने के कारण याकूब की पत्री को ''भूसे की पत्री'' कहा। उसका मानना था कि यह पत्री पौलुस की शिक्षा विश्वास के द्वारा धार्मिकता का खंडन करती है। देखने में, याकूब 2:24 (''कामों के द्वारा मनुष्य धर्मी ठहरता है, केवल विश्वास करने से नहीं'') और रोमियों 3:28 (''इसलिये हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है'') के बीच विरोधाभास प्रतीत होता है। परन्तु इन कथनों को लोगों के दो अलग-अलग समूहों के लिए लिखा गया है जो अलग-अलग परिक्षाओं का सामना कर रहे हैं। इस संदर्भ को देखते हुए, इन पदों के बीच का विरोधाभास हल हो जाता है।

पौलुस उन लोगों को लिखता है जो कामों से उद्धार पाने का प्रयास करते हैं (व्यवस्था का पालन करके)। पौलुस यह कहता है कि उद्धार विश्वास द्वारा प्राप्त परमेश्वर के अनुग्रह के माध्यम से आता है।

याकूब उन लोगों को लिखता है जो यह मानते हैं कि विश्वास सुसमाचार के सत्य को मानिसक रूप से ग्रहण कर लेना ही काफी है। उनका जीवन नहीं बदला है क्योंकि उनका विश्वास सच्चा विश्वास नहीं है। याकूब इस बात पर ज़ोर देता है कि सच्चा विश्वास जीवन बदलने वाला होता है। याकूब विश्वास की केंद्रीयता पर सवाल नहीं उठाता, परन्तु वह यह कहता है कि सच्चा विश्वास कार्यों में दिखता है। याकूब कहता है कि अब्राहम और राहाब का विश्वास उनके कार्यों में देखा जाता है।[346]

[346] याकूब 2:14-26।

याकूब का संदेश पौलुस के संदेश का खंडन नहीं करता, यह विश्वास के माध्यम से अनुग्रह की धार्मिकता के पौलुस के संदेश का एक मूल्यवान सहयोगी है। पौलुस कहता है कि हम परमेश्वर के सामने केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरते हैं। याकूब कहता हैं कि यह धार्मिकता (अन्य लोगों के सामने धर्मी ठहरना) हमारे कार्यों द्वारा देखी जाती है। याकूब यह नहीं सिखाता कि हमारा उद्धार कैसे होता है, वह सिखाता है कि उद्धार प्राप्त करने के बाद हमारा जीवन कैसे परिवर्तित होता है।

कार्यों मे विश्वास

चूंकि हमारा विश्वास हमारे कार्यों द्वारा दिखता है, इसलिए याकूब मसीही कार्यो के प्रश्नों को संबोधित करता है। यह कार्यों में विश्वास हैः

- दुखों और परीक्षा में स्थिर रहना (1:2-18)
- वचन सुनना और उसके अनुसार *कार्य करना* (1:19-27)
- पक्षपात (2:1-13)
- जीभ (3:1-13)
- संसारिक जीवन (3:14-4:4)
- घमंड (4:5-11)
- धनवानों की परीक्षा (4:13-5:6)
- दुख में धैर्य (5:7-11)
- पाप करने वालों के साथ व्यवहार (5:19-20)

कार्यों मे विश्वास

''सबसे बड़ी समस्या मसीहत को व्यवहार में लाना है।''

- जॉन वेस्ली द्वारा प्रदत्त

इन उपदेशों द्वारा, याकूब यह बताता है कि सच्चा विश्वास हमारे जीवन जीने के ढंग को बदल देता है। विश्वास सच्चाई के साथ सहमत होने से भी अधिक है, विश्वास हमारे पूरे अस्तित्व को बदल देता है।

आज की कलीसिया में याकूब की पत्री

हालाँकि, याकूब के पत्र को पहली शताब्दी में सताव का सामना कर रहे यहूदी मसीहियों को लिखा गया था, परन्तु व्यावहारिक मसीहत पर इसका ज़ोर देने के द्वारा यह पत्र आज की दुनिया से गहाराई से बात करता है। कलीसिया में जीभ,

धन, क्रोध, और रिश्तों पर व्यावहारिक शिक्षा कभी पुरानी नहीं होती। याकूब हर पीढ़ी के लिए एक उपयोगी पुस्तक है।

ऐंटिमोनियज़म शब्द का झूठी शिक्षा के लिए उपयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है कि मसीहियों को नैतिक व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी रहने की आवश्यकता नहीं है। यह सिद्धांत बताता है कि विश्वास के माध्यम से अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहर चुके विश्वासी सब प्रकार के अवरोधों से मुक्त हैं। हर पीढ़ी की कलीसिया ऐंटिमोनियज़म को मानने की परीक्षा में पड़ती है। याकूब शक्तिशाली अनुस्मारक ठहरता है कि एक मसीही का जीवन एक अविश्वासी के जीवन से अविश्वसनीय स्पष्ट रूप से अलग होगा। हमारे कार्यों के माध्यम से, दुनिया उस परिवर्तन को देखती है जो मसीह के बचानेवाले उद्धार से आता है।

निष्कर्ष

इब्रानियों और याकूब की पत्रियां दोनों अब्राहम द्वारा विश्वास को व्यवहार में लाये जाने की ओर संकेत करती हैं। इब्रानियों 11 अब्राहम को विश्वास के महापुरुष के रूप में सूचीबद्ध किया करती है, याकूब 2 की पत्री बताती है कि हम अब्राहम के कार्यों के माध्यम से उसके विश्वास को देखते हैं।

अब्राहम का विश्वास परमेश्वर की बुलाहट के प्रति उसकी आज्ञाकारिता में दिखाई देता है, ''विश्वास के द्वारा, अब्राहम ने आज्ञा का पालन किया, जब उसे एक ऐसी जगह पर जाने के लिए कहा गया जिसे वह विरासत के रूप में प्राप्त करने वाला था। और वह यह न जानते हुए कि वह कहां जाता है, उस जगह गया।''[347] विश्वास यह कहने से कहीं अधिक है, ''मुझे परमेश्वर के वादों में विश्वास है'', बल्कि विश्वास यह कहता है, ''मैं वहां जाऊंगा जहां तु मेरी अगुवाई करेगा।''

अब्राहम के विश्वास को तब भी देखा जाता है जब वह परमेश्वर के कहने पर अपने पुत्र इसहाक को बलि करने के लिए तैयार हो जाता है।[348] एक बार फिर से, विश्वास यह कहने से बढ़कर था कि ''मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं।'' विश्वास ने कहा, ''यदि मैं न भी समझूं, तब भी मैं तेरी आज्ञा का पालन करूंगा।'' यही सच्चा विश्वास है।

याकूब ने पाठकों को विश्वास का दावा न करने के लिए चेताया यदि इस विश्वास ने उनके जीवन को नहीं बदला है। याकूब ने अब्राहम की ओर यह दर्शाने के लिए संकेत किया कि सच्चे विश्वास से क्या हो सकता है। अब्राहम के विश्वास को तब

[347] इब्रानियों 11:8।

[348] इब्रानियों 11:17-19; उत्पत्ति 22।

देखा गया जब उसने अपने बेटे इसाहक को वेदी पर चढ़ाने की परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। याकूब इस निष्कर्ष पर पहुंचा, ''सो तू ने देख लिया कि विश्वास ने उस के कामों के साथ मिल कर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ।''[349]

अब्राहम का उदाहरण विश्वास और कार्यों के बीच उचित संबंध को दर्शाता है। यदि हम वास्तव में विश्वास करते हैं (प्रभु पर भरोसा), तो यह हमारे जीने के तरीके को बदल देगा (कार्य)। यदि विश्वास से हमारे जीने के तरीके में बदलाव नहीं आता, तो विश्वास का अंगीकार मरा हुआ है। सच्चे विश्वास के बिना अपने जीवन को बदलने का प्रयास व्यर्थ है। रोमियों, गलातियों, इब्रानियों और याकूब इस बात पर सहमत हैं किः सच्चा विश्वास जीवन को बदल देता है।

पाठ के असाइनमेंट

निम्नलिखित असाइनमेंटों से इस अध्याय की अपनी समझ को दर्शायेंः

(1) निम्न विषयों में से **एक** पर एक उपदेश या बाइबल पाठ तैयार करें। आप इसके लिए 5-6 प्रष्ठ लिख सकते हैं या एक उपदेश को रिकॉर्ड कर सकते हैं या छोटे समूह या कलीसिया के लिए बाइबल पाठ तैयार कर सकते हैं।

- ''विश्वास के उदाहरण'' इब्रानियों 11 *और कलीसिया के इतिहास से विश्वास के उदाहरणों का उपयोग करें।* अपने देश या सांस्कृतिक स्थान में ऐसे ही उदाहरण खोजें जिनसे आपकी मण्डली को विश्वासयोग्यता के लिए प्रेरणा मिले।
- ''विश्वासत्याग।'' इब्रानियों के समान, आपके उपदेश में विश्वासत्याग के खिलाफ चेतावनी और विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहन दोनों होने चाहिए।
- मसीह जीवन के एक मुद्दे पर याकूब की पत्री से एक उपदेश या बाइबल पाठ तैयार करें जैसेः जीभ, विवाद, धन, प्रार्थना, आदि।

(2) इस पाठ की विषय-वस्तु के आधार पर एक परीक्षा लें। इस परीक्षा में कुछ वचन शामिल होंगे, जिनको आपको याद करना है।

[349] याकूब 2:22।

गहराई से खोदना

इब्रानियों और याकूब के बारे में अधिक अध्ययन करने के लिए, कृपया निम्नलिखित संसाधनों को देखें।

मुद्रित स्रोत

Cockerill, Gareth L. *Hebrews: A Bible Commentary in the Wesleyan Tradition (इब्रानियोंः बाइबल समीक्षा वेस्लेयन परंपरा में).* Wesleyan Publishing House, 1999.

Osborne, Grant. *James: Cornerstone Biblical Commentary (याकूबः कॉर्नरस्टोन की बाइबल समीक्षा)।* Tyndale House Publishers, 2011.

Turner, George Allen. *The New and Living Way (नया और जीवन का मार्ग).* Bethany Fellowship, 1975.

Walters, John. *Hebrews: Asbury Bible Commentary (इब्रानियोंः असबरी की बाइबल समीक्षा).* Zondervan Publishing House, 1992.

Earle, Ralph (ed.). *Beacon Bible Commentary, Vol. X: Hebrews through Revelation (बीकन की बाइबल समीक्षा Vol. X: इब्रानियों प्रकाशितवाक्य द्वारा) ,* Beacon Hill Press, 1965.

ऑनलाइन स्रोत

Cockerill, Gareth. ''Hebrews and Contemporary Preaching (इब्रानियों और समकालीन उपदेश)''

http://client.stretchinternet.com/client/tiuadmin.portal# पर

Wesley, John. *Wesley's Explanatory Notes on the New Testament (नए नियम पर वेस्ले की व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ)।*

http://www.biblestudytools.com/commentaries/wesleys-explanatory-notes/

पाठ 10 के परीक्षा प्रश्न

(1) इब्रानियों से यहूदा तक की पुस्तकों को ठ सामान्य पत्रियां ठ क्यों कहा जाता है?

(2) इब्रानियों के लेखक के रूप में पौलुस के पक्ष में दो तर्कों को सूचीबद्ध करें।

(3) इब्रानियों के लेखक के रूप में पौलुस के खिलाफ दो तर्कों को सूचीबद्ध करें।

(4) दो तरीकों को सूचीबद्ध करें जिनके द्वारा इब्रानियों की पुस्तक पुराने नियम के लिए बड़ा सम्मान व्यक्त करती है।

(5) नयी वाचा पुरानी वाचा से कैसे बेहतर है?

(6) पीछे हटने और विश्वासत्याग में क्या अंतर है?

(7) यीशु का भाई यीशु मसीह को मसीहा के रूप में कब मानने लगा?

(8) अभिवादन के आधार पर, वे कौन लोग हो सकते हैं, जिनको याकूब यह पत्र लिखता है?

(9) एक अनुच्छेद में, याकूब 2:24 के बीच (मनुष्य कामों से धर्मी ठहरता है, केवल विश्वास के द्वारा नहीं) और रोमियों 3:28 (मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है) के बीच के संबंध को दर्शायें।

(10) ऐंटिमोनियज़म को परिभाषित करें।

पाठ 11

पतरस, यूहन्ना और यहूदा

सामान्य पत्रियां, भाग 2

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में छात्रः

(1) सामान्य पत्रियों की संभावित तिथि और ऐतिहासिक स्थान को जानें।

(2) सामान्य पत्रियों के प्राथमिक विषयों और उद्देश्यों का संक्षेप दें।

(3) बाइबल के आश्वासन के सिद्धांत को समझें।

(4) झूठी शिक्षा के खतरे से अवगत हों।

(6) इन पुस्तकों के संदेश को आज की दुनिया की जरूरतों से जोड़ें।

पाठ

1 और 2 पतरस, 1,2,3 यूहन्ना और यहूदा पढ़ें।

1 पतरस 1:6-7, 1 यूहन्ना 1:6-7 और यहूदा 1:24-25 को स्मरण करें।

हर पीढ़ी में, कलीसिया को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पहली शताब्दी के अंतिम भाग तक, कलीसिया के बाहर का सताव और इसके अंदर के झूठे शिक्षक कलीसिया के लिए गंभीर खतरे थे। ये खतरे पूरे कलीसिया के इतिहास में जारी रहे हैं। पतरस, यूहन्ना और यहूदा के पत्र इन खतरों के खिलाफ चेतावनी देते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे हमें इन खतरों का सामना करते समय विश्वासयोग्य रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इन छोटे पत्रों में एक बड़ा संदेश हैः जिस परमेश्वर ने हमें बुलाया है, वह हमें हर उस चीज़ पर विजय देने में सक्षम है जो हमें उससे अलग कर सकती है।

पतरस के पत्रः मुश्किल समय में विश्वासयोग्यता

लेखक

शमौन पतरस शुरुआती कलीसिया में सबसे प्रसिद्ध अगुओं में से एक था। अपने भाई अंद्रियास द्वारा यीशु को जानकर, पतरस यीशु के ''आंतरिक घेरे'' का हिस्सा बन गया। उसका मूल नाम शमौन (''उसने सुना है '') था, परन्तु यीशु ने उसका नाम बदलकर पतरस (''चट्टान'') रख दिया।

पतरस की हमेशा बोलने कि जल्दी और अति-विश्वास ने उसे यीशु की सांसारिक सेवा के दौरान बार-बार परेशानियों में डाला, जिसके कारण उसके जीवन में एक इतना खराब समय आया कि उसने यीशु का उसकी सज़ा के समय इनकार कर दिया। पुनरुत्थान के बाद, पतरस बहाल हो गया और प्रारंभिक कलीसिया में प्राथमिक अगुआ बन गया। पिन्तेकुस्त में पतरस की सेवकाई के तहत तीन हज़ार लोगों ने यीशु मसीह को ग्रहण किया। उसने एक मिशनरी के रूप में यात्रा की और नीरो के सताव के दौरान रोम में उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया। कलीसिया की परंपरा के अनुसार, पतरस ने यह अनुरोध किया कि उसे उल्टा क्रूस पर चढ़ाया जाए क्योंकि उसे लगा कि वह अपने उस उद्धारकर्ता की मौत मरने के योग्य नहीं था, जिसका उसने इनकार किया था।[350]

► यीशु की सांसारिक सेवकाई के दौरान पतरस की असफलताएँ इन पत्रों को लिखने में मसीहियों को कठिन समय में विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहित करने में कैसे मदद कर सकती हैं? उसने अपने अनुभवों से क्या सीखा जो इन पत्रों में उसकी शिक्षा को प्रभावित करता है?

लोग और लेखन का स्थान

पतरस ''बाबुल'' से अपना अभिवादन भेजता है जो रोम को दर्शाता है।[351] बाबुल परमेश्वर के लोगों का विरोध करने वाली ताकतों को दर्शाता है, कलीसिया का दुश्मन अब रोमन साम्राज्य था।

बाबुल की कल्पना के समानांतर, पतरस एशिया माइनर में ''निर्वासन में बिखरे लोगा'' के लिए अपना पहला पत्र लिखता है।[352] जैसे निर्वासन के दौरान इस्राएल बिखरा हुआ था, वैसे ही कलीसिया रोम के सताव के कारण बिखर गयी थी। इस्राएल के विपरीत, मसीही अवज्ञा के बजाय अपनी विश्वासयोग्यता के लिए दुख उठा रहे थे, वे मसीह के कष्टों में सहभागी थे।[353]

जिन लोगों को ये पत्र लिखे गये, वे मुख्य रूप से अन्यजाति थे। ये ऐसे विश्वासी हैं जो अब ''अज्ञानता के कारण अपनी पुरानी वासनाआ'' में नहीं जीते हैं।[354] 2 पतरस में स्पष्ट नहीं है कि यह किन लोगों को लिखा गया, लेकिन यह उन्हीं पाठकों के समूह के लिए पतरस का दूसरा पत्र है।[355]

---

[350] यूसेबियस, कलीसिया का इतिहास, 2:25.5-8.

[351] 1 पतरस 5:13।

[352] 1 पतरस 1:1।

[353] 1 पतरस 4:12-13।

[354] 1 पतरस 1:14।

[355] 2 पतरस 3:1।

तारीख

यह संभावना है कि पतरस ने 60 ईसा पश्चात के मध्य में अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले ये पत्र लिखे थे। ये पत्र संभवता 62 और 67 ईसा पश्चात के बीच के होंगे।

उद्देश्य

1 और 2 पतरस दुख उठा रहे मसीहियों को विश्वासयोग्यता के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिस तरह मसीह ने दुख उठाया और फिर महिमान्वित हुआ, उस तरह मसीही पहले इस दुनिया में दुख उठाते हैं और फिर अनन्त महिमा का आनंद उठाते हैं। उन्हें दुख उठाते समय (1 पतरस) और झूठी शिक्षा (2 पतरस) दोनों के समय विश्वासयोग्य रहना है। पतरस अपने पाठकों को विश्वास दिलाता है कि परमेश्वर उन लोगों को पुरस्कृत करेगा जो धीरज धरते हैं।

1 पतरस के विषय

मसीहियों की आशा

> ''... हमें मार डालो, हमें प्रताड़ित करो, हमारी निंदा करो, हमें धूल में पीस दो। तुम्हारा अन्याय इस बात का प्रमाण है कि हम निर्दोष हैं। इसलिए परमेश्वर हमें दुख उठाने देता है।
>
> ... जितना अधिक तुम हमें काटोगे, उतनी अधिक संख्या में हम बढ़ेंगे, मसीहियों का लहू कलीसिया का बीज है।''
>
> - 197 ईसा पश्चात में टरटुलियन

''परमेश्वर पिता के ज्ञान के अनुसार चुने हुआ'' के तौर पर विश्वासियों से ''एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लियेजो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है'' का वादा किया गया है।[356] हालांकि इस दुनिया में दुख है, हमारी ''रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है।''[357] हमारे विश्वास के दुख के बावजूद, हमारे पास अनन्त महिमा की आशा है। यह आशा दुख उठाने वाले विश्वासियों के लिए ''भरपूर आनंद'' लाती है।[358]

---

[356] 1 पतरस 1:2,4।

[357] 1 पतरस 1:5।

[358] 1 पतरस 1:8।

पवित्रता के लिए बुलाहट

क्योंकि हमारे पास अनन्त महिमा की आशा है, इसलिए हमें परमेश्वर की पवित्रता की बुलाहट का जवाब देने के लिए प्रेरित होना चाहिए। लैव्यव्यवस्था 19:2 का हवाला देते हुए, पतरस अपने पाठकों से पवित्र रहने की विनती करता है जैसे परमेश्वर पवित्र है। यह हमारे भाइयों के लिए हमारा प्रेम में दिखेगा, [359]आत्मिक सच्चाई के लिए एक प्यास,[360] और एक शुद्ध जीवन शैली।[361]

सताये जाने वाले मसीहियों को लिखे एक पत्र में, पतरस आश्चर्यजनक रूप से अधिकारियों के अधीन रहने की शिक्षा देता है। यह जानकर कि दुख उठाने के कारण मसीही सब प्रकार के सांसारिक प्राधिकरण को त्याग सकते हैं, पतरस पवित्र लोगों को यह लिखता है कि ''*प्रभु के लिये* मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन में रहो।'' उनके प्रति यह अधीनता मसीह के लिए है, जिसने स्वयं को सांसारिक शासकों के अधीन कर दिया। विश्वासियों को राजनीतिक अधिकारियों के साथ-साथ उचित पारिवारिक प्राधिकरण के अधीन भी रहना है।[362] यदि हम दुख उठाएं तो मसीह होने के कारण दुख उठाएं, न कि गलत कामों के कारण।[363]

पीड़ा महिमा के मार्ग पर

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह ''बाद में होने वाली महिमा'' से पहले दुख उठाएगा[364] ''मसीह ने हमारे लिए देह में होकर दुख उठाया,''[365] और हमें भी दुख उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। जिस तरह मसीह ने महिमा को प्राप्त किया, उसी तरह हम भी उस महिमा को प्राप्त करेंगे जिसका वादा परमेश्वर की संतानों से किया गया है। पतरस ने स्वयं मसीह के कष्टों को देखा था और उसे ''महिमा के प्रगट होने'' की प्रतिज्ञा मिली।[366] यह वादा हर दुख उठाने वाले विश्वासी को प्रोत्साहित करता है।

---

[359] 1 पतरस 1:22।

[360] 1 पतरस 2:2।

[361] 1 पतरस 2:11।

[362] 1 पतरस 2:13-3:7।

[363] 1 पतरस 3:17, 4:12-19।

[364] 1 पतरस 1:11।

[365] 1 पतरस 4:1।

[366] 1 पतरस 5:1।

2 पतरस के विषय

भक्ति में उन्नति

अपने दूसरे पत्र में, पतरस मसीहियों को भक्ति में लगातार उन्नति करने की विनती करता है। ''ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी'' होकर, ''तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ, और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति, और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।''[367]

झूठी शिक्षा के खिलाफ चेतावनी

सताव (1 पतरस की प्राथमिक चेतावनी) कलीसिया के बाहर से आता है; झूठी शिक्षा (2 पतरस की प्राथमिक चेतावनी) अक्सर कलीसिया के अंदर से ही उठती है। पतरस ''झूठे भविष्यद्वक्ताओं'' की शिक्षाओं को उजागर करता है जो कलीसिया में घुसपैठ करते हैं। उनकी शिक्षा का खतरा उनके भ्रष्ट चरित्र में देखा जा सकता है, जिसे 2 पतरस 2:10-16 में संक्षेप में बताया गया है। यह विवरण एक कहावत के साथ समाप्त होता है, ''कुत्ता अपनी छांट की ओर और धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।''[368]

प्रभु के लौटने के प्रकाश में विश्वासयोग्यता

संदेहवादी प्रभु की वापसी पर सवाल उठाकर मसीहियों को हतोत्साहित करने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि ''सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था।''[369] पतरस इसका यह जवाब देता है कि परमेश्वर के धीरज की दया के कारण मसीह की वापसी में इसलिए देर हो रही है। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो, परन्तु ''सभी को पश्चाताप करने का अवसर मिले।''[370] उसकी देरी से पश्चाताप के लिए अवसर मिलता है। परन्तु, इस देरी से हमें मसीह की वापसी की निश्चितता पर संदेह नहीं करना चाहिए। ''प्रभु का दिन रात में चोर की तरह आएगा।''[371] उसकी निश्चित वापसी के प्रकाश में, हमें पवित्र लोगों की तरह रहना चाहिए, हम ''उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष'' पाये जायें और ''हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते'' जाएं।[372]

---

[367] 2 पतरस 1:4-7।

[368] 2 पतरस 2:22।

[369] 2 पतरस 3:4।

[370] 2 पतरस 3:9।

[371] 2 पतरस 3:10।

[372] 2 पतरस 3:11, 14, 18।

1 और 2 पतरस की तुलना[373]	
बाहरी खतराः सताव	आंतरिक खतराः झूठे शिक्षक
मसीह की पीड़ा	प्रभु की महिमा
शांति और प्रोत्साहन	चेतावनी
परीक्षाओं के समय भी हमारे पास आशा है	गलती के समय भी हमारे पास ज्ञान है

यूहन्ना के पत्रः परमेश्वर के साथ संगति

लेखक और तारीख

शुरुआती कलीसिया के जनक जैसे सिकंदरिया के इरेनेस और क्लेमेंट सब ने प्रेरित यूहन्ना को इन पुस्तकों के लेखक के रूप में संदर्भित किया। पतरस की तरह, यूहन्ना भी एक मछुआरा था और यीशु के ''आंतरिक घेरे'' का हिस्सा बन गया था। वह यीशु के मुकदमे में उपस्थित था और यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय मरियम के साथ था। पतरस के साथ, यूहन्ना खाली कब्र के पहले गवाहों में से एक था। अपने सुसमाचार में, यूहन्ना स्वयं को ''अन्य शिष्य'' और वह शिष्य जिससे ''यीशु प्रेम करता था'' के रूप में संदर्भित करता है।

इयुसबीयुस के अनुसार, यूहन्ना और अन्य मसीही 70 ईसा पश्चात में रोम द्वारा शहर को नष्ट करने से कुछ समय पहले यरुशलेम से भाग गए थे। मसीही पेरिया के पेला शहर में भाग गए थे (जो यरदन नदी के पूर्व में स्थित है)। यूहन्ना ने बाद में इफिसुस में सेवा की। यूहन्ना के तीन पत्र संभवतः पहली शताब्दी के अंतिम भाग के दौरान इफिसुस से लिखे गए होंगे।

लोग

1 यूहन्ना में इसका वर्णन नहीं है कि ये पत्र किन लोगों को लिखे गये थे। यूहन्ना अपने पाठकों को ''मेरे बालकों'' और ''भाइयों'' के रूप में संदर्भित करता है। इससे पता चलता है कि वह उन साथी विश्वासियों को संबोधित कर रहा है जिनके साथ उसका घनिष्ठ संबंध था।

2 यूहन्ना एक ''चुनी हुई महिला और उसके बच्चों के नाम, जिन से मैं सत्य में प्रेम रखता हूं'' को लिखा गया है।[374] इस वाक्यांश की दो संभावित व्याख्याएं हैंः

---

[373] Merrill F. Unger, *Unger's Bible Handbook (Chicago, IL: Moody Press, 1966)* से लिया गया।

[374] 2 यूहन्ना 1:1।

- यह एक अनाम महिला हो सकती है जिसने एक कलीसिया को अपने घर में मिलने की अनुमति दी।
- ''चुनी हुई महिला'' एक कलीसिया हो सकती है जिसे यूहन्ना जानता है, ''उसके बच्चे'' उस कलीसिया के सदस्य हो सकते हैं।

3 यूहन्ना गयुस को लिखा गया है, जो यूहन्ना द्वारा प्रभु में आया विश्वासी था।

1 यूहन्ना का उद्देश्य और विषय वस्तु

तीन पत्रों में से पहला पत्र सबसे लंबा है। एक पारंपरिक अभिवादन के बजाय, यूहन्ना अपने पत्र के अधिकार का समर्थन करने वाले एक कथन से शुरुआत करता है। वह किसी अफवाह या झूठी बातोंके विषय में नहीं लिखता, बल्कि उन बातों के विषय में लिखता है, ''जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा और हाथों से छुआ।''[375] 1 यूहन्ना मसीह के जीवन के तथ्यात्मक सत्य पर ज़ोर देने के कारण यूहन्ना के सुसमाचार से काफी मिलता जुलता है।

परमेश्वर के साथ संगति की शर्तें

यूहन्ना इस पत्र के लिखने के अपने उद्देश्य को पत्र के शुरुआत में ही बताता है, ''ये बातें हम इसलिये लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।''[376] यह आनन्द पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ संगति के माध्यम से आता है।[377] परमेश्वर के साथ हमारी संगति के विषय में लिखते हुए, यूहन्ना ''जानना'' शब्द का उपयोग करता है। परमेश्वर को ''जानना'' मानसिक ज्ञान से अधिक है, यह एक अनुभवात्मक संबंध है। यूहन्ना परमेश्वर के साथ संगति बनाए रखने के लिए शर्तें बताता हैं:

- हमें ज्योति में चलना है (1:6-7)।
- हमें पाप में नहीं चलना है (2:1-2)।

पाप और परमेश्वर के साथ संगति

यूहन्ना की पाप के विषय की शिक्षा में दो महत्वपूर्ण सत्य शामिल हैं:[378]

---

[375] 1 यूहन्ना 1:1।

[376] 1 यूहन्ना 1:4।

[377] 1 यूहन्ना 1:3।

[378] 1 यूहन्ना 2:1।

- **परमेश्वर विजयी जीवन के लिए सामर्थ प्रदान करता है**, ''ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं ताकि तुम पाप न करो।'' यदि हम परमेश्वर के साथ संगति बनाए रखते हैं, तो हम पाप के साथ संगति नहीं बनाए रखेंगे (1:6-2:5; 3:6-9)। परमेश्वर की संतान होने के कारण, हम जानबूझकर पाप नहीं करते रहेंगे। हम एक ही समय पर पाप और परमेश्वर के साथ नहीं चल सकते।

- **परमेश्वर पाप में पड़ने वालों के लिए अनुग्रह प्रदान करता है**, ''यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धर्मी यीशु मसीह।'' हालाँकि, परमेश्वर लगातार विजय का जीवन चाहता है, फिर भी वह उस व्यक्ति के लिए अनुग्रह का वादा करता है जो पाप में पड़कर पश्चाताप करता है (1:9; 2:1-2)।

परमेश्वर के साथ प्रेम और संगति

परमेश्वर के लिए प्रेम

पाप पर निरंतर विजय केवल व्यक्तिगत अनुशासन या आत्म-नियंत्रण पर आधारित नहीं है, यह परमेश्वर के लिए आपके प्रेम पर आधारित है। मसीही जीवन को नियंत्रित करने वाला सिद्धांत परमेश्वर के प्रति प्रेम है।[379] परमेश्वर के लिए प्रेम होने के कारण ही हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हम ''न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखेंगे।''[380]

अन्य मसीहियों के लिए प्रेम

जो व्यक्ति अपने भाई से प्रेम नहीं रखता, वह ''परमेश्वर की ओर से नहीं है।'' यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखेंगे, तो हम परमेश्वर के बच्चों से भी प्रेम रखेंगे।[381] इस बात का साक्ष्य कि हमने मृत्यु को पार करके जीवन में प्रवेश किया है, वह हमारे मसीही भाइयों के लिए हमारा प्रेम है। यह प्रेम व्यर्थ के शब्दों से कहीं अधिक है, यह हमारे कार्यों में देखा जाता है।[382]

---

[379] और अधिक जानने के लिए A. Philip Brown, II की पुस्तक, Loving God: The Primary Principle of the Christian Life (परमेश्वर से प्रेमः मसीही जीवन का प्राथमिक सिद्धांत) देखें। Revivalist Press, 2005।

[380] 1 यूहन्ना 2:5, 15।

[381] 1 यूहन्ना 3:10-11, 4:20-21।

[382] 1 यूहन्ना 3:14-18।

परमेश्वर के बच्चों को आश्वासन

यूहन्ना ने इसलिए लिखा है ताकि उसके पाठक ''यह जान सकें कि अनन्त जीवन तुम्हारा है, तुम परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास रखों।''[383] निरंतर आश्वासन के लिए निरंतर आज्ञाकारिता की आवश्यकता है। यदि हम में ये विशेषताएं हैं, तो हम जानेंगे कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं:

सत्य के प्रति आज्ञाकारिता (1:6-7)

आश्वासन का यह पहलू यूहन्ना 8:31 में उद्धृत यीशु के शब्दों के समानांतर है, ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तुम सच में मेरे चेले ठहरोगे।'' यीशु के वचन पर निरंतर ध्यान और इसके प्रति आज्ञाकारिता के आधार पर ही हमें उसके चेले होने का आश्वासन प्राप्त होता है।

जानबूझकर पाप न करना (3:8-10)

चूँकि हम परमेश्वर के प्रति जानबूझकर विद्रोह करते रहने से उसके साथ संगति नहीं रख सकते, इसलिए हमारे पास स्पष्ट रूप से इस तरह का विद्रोह करते रहने से कोई आश्वासन नहीं होगा।

अन्य मसीहियों के लिए प्रेम (3:14-19)

यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।''[384] यूहन्ना ने ऐसे ही कथन को अपनी पत्री में दोहराया, ''हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं।''[385]

2 यूहन्ना का उद्देश्य और विषय वस्तु

2 यूहन्ना का संदेश 1 यूहन्ना के समानांतर है। परमेश्वर के साथ संगति में रहने का अर्थ परमेश्वर के प्रेम में रहना और परमेश्वर के सत्य में चलना है। 2 यूहन्ना में प्रेम की आज्ञा कोई नई आज्ञा नहीं है, यह शुरुआत से ही सिखायी गयी थी।[386]

---

[383] 1 यूहन्ना 5:13।

[384] यूहन्ना 13:35।

[385] 1 यूहन्ना 3:14।

[386] 2 यहन्ना 1:5-6।

2 यूहन्ना में जिस प्रेम की आज्ञा है, वह समझ भरा प्रेम है जो सत्य को थामे रहता है। समझ इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसे कई धोखा देनेवाले हैं जिन्होंने मसीह को स्वीकार नहीं किया है। यूहन्ना ''चुनी हुई महिला'' को उस सत्य को थामे रहने के लिए चेताता है कि ''यीशु मसीह शरीर में होकर आया है।''[387] परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए हमें झूठी शिक्षा को त्यागना होगा।[388]

3 यूहन्ना का उद्देश्य और विषय वस्तु

3 यूहन्ना मसीही आतिथ्य के बारे में एक निजी पत्र है। ''मसीही आतिथ्य'' उस मित्रता से भी बढ़कर है जिसे आप किसी के लिए व्यक्त कर सकते हैं, यह कलीसिया की एकता की अभिव्यक्ति है। 2 यूहन्ना ने झूठी शिक्षा देने वालों का स्वागत करने के खिलाफ चेताया। 3 यूहन्ना उन लोगों को त्यागने के खिलाफ चेताता है जो सच्ची शिक्षा देते हैं।

गयुस मसीही आतिथ्य से प्रचारकों का स्वागत करता है और उनके साथ ''सत्य के सहकमी'' के रूप में व्यवहार करता है।[389] इसके विपरीत, दियुत्रिफेस ने इन भाइयों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। दियुत्रिफेस अपने लिए ऊंचा पद चाहता है, यूहन्ना के प्रेरिताई अधिकार को अस्वीकार करता है और उन सच्चे मसीहियों को निष्कासित करता है जो उसे चुनौती देते हैं।[390]

3 यूहन्ना देमेत्रियुस द्वारा दिखाए गए मसीही प्रेम की तुलना दियुत्रिफेस के व्यवहार से करता है। यह छोटा पत्र मसीही प्रेम के व्यावहारिक अनुप्रयोग को दर्शाता है जिसकी 1 यूहन्ना में आज्ञा दी गई है और सत्य की खोज में कलीसिया की एकता को दर्शाता है, जिसकी आज्ञा 2 यूहन्ना में दी गयी है।

यहूदा: गलत शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी

लेखक और तारीख

यहूदा यीशु का सौतेला भाई था। अपने भाई याकूब की तरह, यहूदा ने यीशु के पुनरुत्थान तक यीशु पर विश्वास नहीं किया।[391] अपने पत्र में, यहूदा ने खुद को ''यीशु मसीह के सेवक और याकूब के भाई'' के रूप वर्णित किया।[392]

---

[387] 2 यूहन्ना 1:7-8।

[388] 2 यूहन्ना 1:10-11।

[389] 3 यूहन्ना 1:5-8।

[390] 3 यूहन्ना 1:9-10।

[391] मत्ती 13:55; मरकुस 6:3, यूहन्ना 7:3-5; 1 कुरिन्थियों 15:7।

[392] यहूदा 1:1।

यहूदा की पत्री की तारीख के विषय में एकमात्र प्रमाण इसकी 2 पतरस से समानता है। चूंकि ये पत्र एक जैसी समस्याओं को संबोधित करते हैं, इससे यह पता चलता है कि यहूदा कि पत्री को लगभग 60 ईसा पश्चात के मध्य में लिखा गया होगा, जब 2 पतरस को लिखा गया था।

लोग

यहूदा की पत्री ''उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिये सुरक्षित हैं'' लिखी गयी।[393] यहूदी विषयों के संदर्भ से पता चलता है कि पुस्तक यहूदी मसीहियों को संबोधित थी।

उद्देश्य और विषय वस्तु

यहूदा यह इंगित करता है कि उसने हमारे उद्धार के विषय पर एक सैद्धांतिक पत्र लिखना चाहा।[394] परन्तु, क्योंकि झूठे शिक्षक कलीसिया में घुसपैठ कर रहे थे, इसलिए पवित्र आत्मा ने यहूदा को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह झूठी शिक्षा के खिलाफ अपने साथी विश्वासियों को चेताये।

यहूदा के संदेश में ये बातें शामिल हैं:

- झूठे शिक्षकों और उनके संदेश के खिलाफ चेतावनी।
- इन शिक्षकों पर आने वाले दंड का विवरण।
- धीरज का आह्वान।
- उसके लिए समापन का स्तूतिगान, जो ''तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है।''[395]

आज की कलीसिया में सामान्य पत्रियां

सामान्य पत्रियां, विशेष रूप से 1 पतरस, हमें **संकट में भी विश्वासयोग्य** रहने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। पतरस ने अपने पाठकों से यह विनती की वे आज ''खुद को विनम्र'' करें, ताकि ''वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।''[396] मसीही जीवन में दुख उठाना सामान्य बात है, परन्तु हमें अंत में इस दुख से महिमा प्राप्त

---

[393] यहूदा 1:1।

[394] यहूदा 1:3।

[395] यहूदा 1:24।

[396] 1 पतरस 5:6।

होगी। इस वादे ने पहली सदी के मसीहियों को प्रोत्साहित किया और इक्कीसवीं सदी के मसीहियों को भी इससे प्रोत्साहित होना चाहिए।

इन पुस्तकों में से प्रत्येक पुस्तक **व्यावहारिक मसीही जीवन** को प्रोत्साहित करती है। भले ही यह पतरस की अधिकारियों के अधीन रहने कि विनती हो, 1 यूहन्ना का हमारे भाइयों से प्रेम करने का संदेश हो, 2 यूहन्ना का सत्य के प्रति उपदेश हो, 3 यूहन्ना का मसीही आतिथ्य का आह्वान हो, या यहूदा की झूठे शिक्षक के खिलाफ चेतावनी हो, ये सामान्य पत्रियां यह शिक्षा देती हैं कि सत्य मानसिक ज्ञान से कहीं बढ़कर है। हमें अपना दैनिक जीवन बाइबल के सत्य के अनुसार जीने के लिए बुलाया गया है।

निष्कर्ष

पहली शताब्दी में, कई मसीहियों ने (जिनमें अधिकांश प्रेरित शामिल) अपने विश्वास के लिए अपनी जान दे दी। दूसरी शताब्दी में, पॉलीकार्प को सम्राट के लिए धूप जलाने से मना करने के लिए मार दिया गया। चौथी शताब्दी में, सिकंदरिया के कैथरीन के सम्राट के सामने गवाही देने के बाद सर कलम कर दिया गया।

चौदवीं शताब्दी में, जॉन विक्लिफ की देह को जला दिया गया क्योंकि उन्होंने बाइबल का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। पंद्रहवी शताब्दी में, रोमन कैथोलिक धर्म के सिद्धांतों को न मानने पर जॉन हस को जला कर मार दिया गया। सौलहवी शताब्दी में, जापान के नागासाकी में उस समय छब्बीस मसीहियों को क्रूस पर चढ़ा दिया गया, जब सताव से कलीसिया को दबाने का प्रयास किया गया।

बीसवीं शताब्दी में, चीन, सोवियत संघ और अन्य अधिनायकवादी देशों में हजारों मसीही शहीद हो गए। इक्किसवीं शताब्दी में, इस्लामी देशों में मसीही लोग हरदिन सताव और मौत के खतरों का सामना करते हैं।

हर पीढ़ी में, मसीहियों ने अपने विश्वास के लिए अपनी जान को खोया है। परन्तु कलीसिया के लिए, यह हतोत्साह का कारण नहीं है। पतरस प्रताड़ित विश्वासियों को यह याद दिलाता है कि ''परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।''[397] कलीसिया विजयी है! यह सामान्य पत्रों का वादा है।

---

[397] 1 पतरस 5:10।

पाठ के असाइनमेंट

निम्नलिखित असाइनमेंट से इस अध्याय की अपनी समझ को दर्शायें:

(1) निम्न विषयों में से **एक** पर एक उपदेश या बाइबल पाठ तैयार करें। आप इसके लिए 5-6 प्रष्ठ लिख सकते हैं या एक उपदेश को रिकॉर्ड कर सकते हैं या पाठ तैयार कर सकते हैं।

- ''मसीह जीवन में पीड़ा।'' 1 पतरस में सिखाए गए सिद्धांतों का उपयोग करें और फिर उन्हें कलीसिया के इतिहास के उदाहरणों के साथ चित्रित करें, विशेष रूप से अपने देश की कलीसिया के इतिहास से।
- ''परमेश्वर के साथ संगति।'' 1 यूहन्ना की पत्री से परमेश्वर के साथ संगति के लिए मानदंड शामिल करें।

(2) इस पाठ की विषय-वस्तु के आधार पर एक परीक्षा लें। इस परीक्षा में कुछ वचन शामिल होंगे जिनको आपको याद करना है।

गहराई से खोदना

सामान्य पत्रों का अध्ययन करने के लिए, कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें:

मुद्रित स्रोत

Bray, Gerald. *Ancient Christian Commentary on Scripture: James-Jude (प्राचीन मसीही समीक्षा बाइबल पर: याकूब-यहूदा)*। Intervarsity Press, 2000.

Brown, A. Philip, II. *Loving God: The Primary Principle of the Christian Life (परमेश्वर से प्रेम: मसीही जीवन का प्राथमिक सिद्धांत).* Revivalist Press, 2005।

Maier, Paul L. (Translator). *Eusebius: The Church History (यूसेबियस: कलीसिया का इतिहास)*। Kregel Publishing, 2007. (इस प्राचीन स्रोत का पढ़ने में आसान अनुवाद)

Marshall, I. Howard. *1 Peter (1 पतरस).* Intervarsity Press, 1991.

Marshall, I. Howard. *The Epistles of John (New*

International Commentary on the New Testament) (यूहन्ना के पत्रियां (नई अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा नए नियम पर))। Eerdmans, 1978.

Wiersbe, Warren. *Be Alert: 2 Peter, 2 & 3 John, Jude (सावधान रहोः 2 पतरस, 2 और 3 यूहन्ना, यहूदा)* । David C. Cook, 2010.

ऑनलाइन स्रोत

''John Wesley and Christian Orthodoxy'' (जॉन वेस्ले और मसीही रूढ़िवाद)
http://www.seedbed.com/seven-minute-seminary/ पर

Wesley, John. *Wesley's Explanatory Notes on the New Testament (नए नियम पर वेस्ले की व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ)*।

http://www.biblestudytools.com/commentaries/wesleys-explanatory-notes/

पाठ 11 के परीक्षा प्रश्न

(1) पतरस के अभिवादन में ''बाबुल'' का संभावित अर्थ क्या हो सकता है?

(2) वह प्राथमिक खतरा क्या है जिसका सामना कलीसिया 1 पतरस में करती है?

(3) वह प्राथमिक खतरा क्या है जिसका सामना कलीसिया 2 पतरस में करती है?

(4) 2 यूहन्ना में ''चुनी हुई महिला और उसके बच्चों'' वाक्यांश की दो संभावित व्याख्याएं क्या हैं?

(5) पाप के विषय में 1 यूहन्ना की शिक्षा में कौन से दो सत्य महत्वपूर्ण हैं?

(6) 1 यूहन्ना के अनुसार, परमेश्वर के किसी भी बच्चे में कौन सी तीन विशेषताएं देखी जाएंगी?

(7) 3 यूहन्ना का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?

(8) यहूदा और यीशु के बीच क्या संबंध था?

पाठ 12

प्रकाशितवाक्य: यीशु प्रभु है

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में छात्रः

(1) प्रकाशितवाक्य के लेखक, तारीख और ऐतिहासिक स्थान को जाने।

(2) प्रकाशितवाक्य में महत्वपूर्ण विषयों को पहचानें।

(3) प्रकाशितवाक्य की व्याख्या करने के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रमुख सिद्धांतों की तुलना करें।

(4) प्रकाशितवाक्य के संदेश को आज की दुनिया की ज़रूरतों से जोड़ें।

पाठ

प्रकाशितवाक्य को पढ़ें।

प्रकाशितवाक्य 3:20-21 को याद करें।

पहली शताब्दी के मसीहियों को दो प्रतिस्पर्धी सत्य के दावों का सामना करना पड़ा था। एक ओर, वे जानते थे कि ''यीशु मसीह प्रभु है।''[398] एक मसीही व्यक्ति यीशु मसीह के अधिकार और प्रभुत्व के प्रति प्रतिबद्ध है। दूसरी ओर, रोम की यह मांग थी कि साम्राज्य के अधिकार के तहत सब लोगों को यह गवाही देनी होगी कि *सीज़र डोमिनस एट डेस नॉस्टर* (हमारा प्रभु और परमेश्वर) है।

रोम ने तब तक कई धर्मों को सहन किया, जब तक उन्होंने सम्राट को सबका प्रभु माना। कई इतिहासकारों का तर्क है कि रोम ने मसीहियों को *मसीही होने के लिए* नहीं सताया था। मसीही तब तक यीशु की उपासना कर सकते थे जब तक वे सम्राट के प्रति परम निष्ठा की कसम खाते थे। परन्तु एक सच्चा मसीही, सम्राट को सब के प्रभु के रूप में कभी नहीं मान सकता था।

पॉलीकार्प की शहादत के एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, न्यायाधीश ने वृद्ध पवित्र जन को रिहा करने की पेशकश की यदि वह सीज़र को ईश्वर के रूप में मानेगा। उसने पॉलीकार्प से पूछा, ''ऐसा कहने में 'सीज़र प्रभु है', और धूप जलाने में क्या

[398] फिलिपियों 2:11।

नुकसान है?''[399] पॉलीकार्प जानता था कि मसीहियों के लिए केवल एक ही प्रभु है। मसीही किसी भी मनुष्य को परम निष्ठा नहीं दे सकते।

यह रोम और प्रारंभिक कलीसिया के बीच विवाद का मुद्दा था। इस विवाद के कारण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ने शुरुआती मसीहियों से यह कहा कि, ''यीशु प्रभु है।'' यहां तक कि एक ऐसी दुनिया के लिए भी जो उसके अधिकार को नहीं मानती, यीशु प्रभु है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पौलुस के शब्दों का एक नाटकीय विवरण प्रदान करती है:

> इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है, वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें।और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।[400]

यीशु प्रभु है।

प्रकाशितवाक्य की पृष्ठभूमि

लेखक, तारीख और स्थान

प्रकाशितवाक्य का लेखक स्वयं को यूहन्ना कहता है, ''जो तुम्हारा भाई, और यीशु के क्लेश, और राज्य, और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं।''[401] प्रारंभिक कलीसिया की परंपरा ने यूहन्ना, ''प्रिय शिष्य'' को, यूहन्ना के सुसमाचार, तीन पत्रियों और प्रकाशितवाक्य का लेखक माना।

इस पत्र की तारीख बताना कठिन है। दो संभावनाएं हैं, जो यूहन्ना के जीवनकाल और शुरुआती कलीसिया के सताव के साथ सही बैठती हैं। एक संभावित तारीख नीरो के शासन के समय की हो सकती है, जो बड़े सताव का समय था। इससे भी अधिक संभावित तारीख सम्राट डोमिशियन (81-96 ईसा पश्चात) द्वारा सताव के समय की हो सकती है। दूसरी शताब्दी में, इरेनाईस ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को डोमिशियन के शासन के समय की तारीख दी।[402] अधिकांश प्रचारक इस समय को प्रकाशितवाक्य की तारीख के रूप में स्वीकार करते हैं।

---

[399] *The Martyrdom of Polycarp* जिसका अनुवाद J.B. Lightfoot द्वारा किया गया।

[400] फिलिपियों 2:9-11।

[401] प्रकाशितवाक्य 1:9।

[402] इरेनियस, विरुध मतों के ख़िलाफ5.30.3।

प्रकाशितवाक्य को पतमुस से लिखा गया था, जो एजियन सागर में एक छोटा सा द्वीप है, [403]जहां यूहन्ना को उसके विश्वास के कारण निर्वासित कर दिया गया था। हालाँकि, ऐसा हो सकता है कि सम्राट ने ही उसके निर्वासन की आज्ञा दी हो, फिर भी यूहन्ना यह स्पष्ट करता है कि इस परिस्थिति में भी, ''यीशु ही प्रभु है।'' वह ''परमेश्वर के वचन के लिए और यीशु मसीह की गवाही के लिए'' पतमुस द्वीप में है।[404] पतमुस द्वीप पर भी, सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है।

उद्देश्य

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस सवाल का जवाब देती है कि, ''प्रभु कौन है?'' इसका उत्तर इसके परिचय में ही दिया गया है, ''यीशु मसीह की ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है।''[405] दुख उठाने वाले मसीहियों को यूहन्ना यह लिखता है, ''यीशु मसीह पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है।'' बाहरी परिस्थितियों के बावजूद भी सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है।

यूहन्ना इस सत्य को तीन तरह से प्रस्तुत करता हैः

1. सात कलीसियाओं को संदेश (प्रकाशितवाक्य 2-3)। **यीशु अपनी कलीसिया का प्रभु है।**
2. सिहांसन पर बैठे परमेश्वर और विजयी मेमने का दर्शन (प्रकाशितवाक्य 4-5)। **यीशु स्वर्ग का प्रभु है।**
3. स्वर्ग के दृष्टिकोण से इतिहास का एक दृश्य (प्रकाशितवाक्य 6-22) **यीशु पृथ्वी के सभी राज्यों का प्रभु है।**

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ना

अंत के समय का साहित्य

अंत के समय की पुस्तक के रूप में, प्रकाशितवाक्य नए नियम की पुस्तकों में अद्वितीय है। इसी पुस्तक का एक उदाहरण पुराने नियम की दानिय्येल की पुस्तक है। अंत के समय का यह लेखन छिपे हुए सत्य को ''प्रकट'' या ''उजागर'' करता है। अंत के समय का यह लेखन मानव इतिहास में परमेश्वर के उद्देश्यों को प्रकट करता है।

---

[403] www.openbible.info वेबसाइट से अनुमति द्वारा लिया गया नक्शा।

[404] प्रकाशितवाक्य 1:9।

[405] प्रकाशितवाक्य 1:5।

अंत के समय का साहित्य संवाद करने के लिए नाटकीय प्रतीकों का उपयोग करता है। प्रकाशितवाक्य ड्रैगन, जानवरों और भूकंप और ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से भरी है। अंत के समय के साहित्य को पढ़ने में एक कठिनाई यह है कि ये प्रतीक समय के साथ और विभिन्न सांस्कृतिक स्थानों में अपना अर्थ बदलते हैं। उदाहरण के लिए, ड्रैगन का उपयोग पश्चिम में बुराई और खतरे के प्रतीक के रूप में किया जाता है पर कई पूर्वी संस्कृतियों में, ड्रैगन शक्ति और सफलता का प्रतीक है। इन प्रतीकों की व्याख्या करने से उत्पन्न होने वाले अंतर से पाठकों को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझने में कठनाई हो सकती है।

प्रकाशितवाक्य के प्रतीकों की सही ढंग से व्याख्या करने की एक कुंजी यह है कि इसके अधिकांश चिन्ह पुराने नियम, विशेष रूप से निर्गमन, भजन संहिता, दानिय्येल, यहेजकेल, यशायाह और जकर्याह से आते हैं। प्रकाशितवाक्य के आधे से अधिक पद पुराने नियम के किसी विषय या छवि की ओर संकेत करते हैं। जब भी प्रकाशितवाक्य को ध्यान से पढ़ने वाला कोई व्यक्ति इसके किसी प्रतीक का अध्ययन करना चाहेगा तो वह सबसे पहले पुराने नियम को देखेगा।

अंत के समय का साहित्य दर्शनों के माध्यम से ऐतिहासिक या भविष्यद्वाणी की वास्तविकता को चित्रित करता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में साठ से अधिक दर्शन शामिल हैं। ये अक्सर आपस में उलझे हुए हैं, इसलिए इनका सटीक तिथिक्रमानुसार क्रम बनाना मुश्किल है। विवरणों को विस्तृत करने या किसी घटना पर वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए एक से अधिक दर्शन एक ही घटना के अतिव्यापी दृश्य प्रस्तुत कर सकते हैं।

अंत के समय के साहित्य का अध्ययन करते वक्त एक पाठक के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण बात होगी कि वह इसके विवरणों से व्याकुल हुए बिना केवल इसके प्रमुख विषयों पर अपना ध्यान केंद्रित करे। प्रकाशितवाक्य के बड़े विषयों में यीशु का प्रभुत्व, परमेश्वर की संप्रभुता और कलीसिया की अंतिम विजय शामिल हैं। ये विषय पुस्तक के कई विपरीत किस्सों को एकजुट करते हैं।

इसकी व्याख्या के सिद्धांत

क्योंकि प्रकाशितवाक्य बाइबल साहित्य की ऐसी असामान्य शैली है, इसलिए इसने अपनी व्याख्या करने के लिए कई अलग-अलग तरीकों को जन्म दिया है। इस पुस्तक के चार प्राथमिक दृष्टिकोण हैं। इनमें से प्रत्येक के भीतर, अलग-अलग बातों पर ज़ोर दिया गया है। प्रकाशितवाक्य के परिचय के लिए, इन चार दृष्टिकोणों का अवलोकन पर्याप्त होगा। इस अध्याय के अंत में ग्रंथ सूची आगे के अध्ययन के लिए संसाधन प्रदान करती है।

प्रिटरिस्ट दृष्टिकोण

प्रिटरिस्ट यह मानते हैं कि प्रकाशितवाक्य पहली शताब्दी के अंत की घटनाओं के विषय में है। इस दृष्टिकोण के अनुसार प्रकाशितवाक्य की घटनाएं यूहन्ना के जीवनकाल में या उसके तुरंत बाद हुईं। यह प्रकाशितवाक्य को कलीसिया और रोमन साम्राज्य के बीच विवाद के एक विवरण के रूप में देखता है। यह विवाद मसीह के साम्राज्य की विजय के साथ समाप्त हुआ क्योंकि कलीसिया पूरे विश्व में फैल गयी थी। इस दृष्टिकोण के अनुसार, प्रकाशितवाक्य की भविष्यद्वाणियां पहली सदी में ही पूरी हो गयी थीं।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

इतिहासकार प्रकाशितवाक्य को कलीसिया के इतिहास के प्रतीकात्मक चित्र के रूप में आरंभिक कलीसिया के समय से मसीह की वापसी के समय नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना के रूप में पढ़ते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का 1-3 भाग यूहन्ना के समय की कलीसियाओं से बात करता है। प्रकाशितवाक्य 4-19 का भाग पूरे इतिहास में कलीसिया का एक तिथिक्रमानुसार विवरण देता है। प्रकाशितवाक्य 20-22 का भाग मसीह की भविष्य की वापसी को चित्रित करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, केवल प्रकाशितवाक्य 20-22 की भविष्यद्वाणियां पूरी होना बाकी हैं।

आदर्शवादी दृष्टिकोण

आदर्शवादी इतिहासकार इस बात पर सहमत होते हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अच्छाई (मसीह और कलीसिया) और बुराई (शैतान और उसके अनुयायियों) के बीच संघर्ष का एक विवरण प्रदान करती है। हालांकि, आदर्शवादियों का तर्क है कि यह किसी विशेष ऐतिहासिक क्रम के बगैर एक प्रतीकात्मक विवरण ही है। इस दृष्टिकोण से, प्रकाशितवाक्य 4-19 का भाग किसी भी विशिष्ट ऐतिहासिक काल से संबंधित नहीं है। यह मसीह और बुराई के बीच चल रहे संघर्ष का प्रतीक है, एक ऐसा संघर्ष जो मसीह के आने के साथ खत्म हो जाएगा और जिससे प्रकाशितवाक्य 20-22 में वर्णित नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना होगी। इस दृष्टिकोण के अनुसार, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भविष्य में होने वाली किसी विशिष्ट घटना की भविष्यद्वाणी नहीं करती, सिवाय मसीह की वापसी के।

भविष्यवादी दृष्टिकोण

इतिहासकारों की तरह, भविष्यवादी प्रकाशितवाक्य को विशेष ऐतिहासिक घटनाओं के एक विवरण के रूप में पढ़ते हैं। इस व्याख्या से प्रकाशितवाक्य

1-3 को यूहन्ना के समय की कलीसिया के रूप में देखा जाता है। इतिहासकारों के विपरीत, भविष्यवादी प्रकाशितवाक्य 4-22 के अधिकांश भाग को भविष्य के रूप में देखते हैं। भविष्यवादी ढांचे के भीतर, प्रकाशितवाक्य में चित्रित भविष्य की चार प्रमुख व्याख्याएं हैं।

क्लासिकल प्रीमिनिलियनिज़्म (कम से कम दूसरी शताब्दी से शुरू हुए समय) के अनुसार कलीसिया अंत के समय तक सताव का सामना करती रहेगी। यह सताव मसीह के लौटने से ठीक पहले ''बड़े क्लेश'' के समय चर्म पर होगा। जब मसीह वापस आयेगा तो विश्वासियों का पुनरुत्थान होगा, उसके बाद सहस्र वर्ष का समय होगा, जिसके दौरान मसीह पृथ्वी पर राज्य करेगा।[406] सहस्र वर्ष के बाद बड़े श्वेत सिंहासन के पास अविश्वासियों का न्याय होगा।[407] फिर परमेश्वर एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी की स्थापना करेगा जो उन सभी के लिए शाश्वत घर होगा, जिनके नाम मेमने की पुस्तक में लिखे गए हैं।

डिस्पेंसेशनल प्रीमेलेनियलिज़्मक्लासिकल प्रीमिनिलियनिज़्म शिक्षण का एक छोटा संस्करण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, कलीसिया को ''बड़े क्लेश'' की अवधि से पहले पृथ्वी से स्वर्ग पर उठा लिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 4-19 की उथल-पुथल को सात साल की अवधि के दौरान पृथ्वी पर इस्राएल के क्लेश के चित्रण के रूप में देखा जाता है, जिस समय में कलीसिया यीशु के साथ स्वर्ग में होगी। मसीह फिर पृथ्वी पर अपना हजार वर्ष का शासन स्थापित करता है। क्लासिकल प्रीमिनिलियनिज़्म की तरह, इस अवधि के बाद न्याय होगा और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का निर्माण होगा।

पोस्टमिलेनियलिज़्म (जो 18$^{वीं}$ और 19$^{वीं}$ शताब्दी में लोकप्रिय था) यह सिखाता है कि सुसमाचार पूरी दुनिया में फैल जाएगा और समाज को न्याय और शांति के युग में बदल देगा। इस दृष्टिकोण के अनुसार, हजार वर्ष का समय कलीसिया के द्वारा सुसमाचार के प्रसार के कारण, दुनिया पर विजय है। हजार वर्षों के बाद मसीह लौटेगा, शैतान को स्थायी रूप से हरायेगा और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना करेगा।

---

[406] ''सहस्र वर्ष'' 1,000 वर्षों की अवधि को संदर्भित करता है।

[407] प्रकाशितवाक्य 20:11-15।

एमिलेनियलिज़्म (जो लगभग दूसरी शताब्दी में शुरू हुआ) पोस्टमिल्लेनिज़्म के साथ इस बात पर सहमत होता है कि मसीह प्रकाशितवाक्य 20:1-6 के हज़ार वर्षों के बाद वापस आएगा। एमिलेनियलिज़्म को मानने वालों का दृष्टिकोण पोस्टमिल्लेनिज़्म के माननेवालों के दृष्टिकोण से अलग है क्योंकि वे सहस्राब्दी को किसी ऐतिहासिक समय के रूप में नहीं, बल्कि कलीसिया के पूरे युग के प्रतीक के रूप में देखते हैं। कलीसिया की सेवा के माध्यम से सहस्त्राब्दी का वादा आत्मिक तरीके से पूरा होता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कलीसिया की आशीषों और संघर्षों को आलंकारिक तरीकों से चित्रित करती है। ये संघर्ष मसीह की वापसी के साथ समाप्त हो जाएंगे, उसके बाद न्याय होगा और विश्वासियों के लिए नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की शुरूआत होगी।

> ''ज़रुरी चीज़ों में, एकता।
> गैर-ज़रुरी चीज़ों में, आज़ादी।
> सब चीज़ों में, दान।''
> - रूपर्टस मेलडेनियस, 1627

प्रकाशितवाक्य के पाठक इस पुस्तक की अपनी व्याख्या में बहुत सिद्धांतवादी बन सकते हैं। हम प्रकाशितवाक्य अपनी स्वयं की व्याख्या की तुलना पवित्रशास्त्र के अधिकार के साथ करके भ्रमित न हों। पवित्रशास्त्र के पूर्ण सत्य को मानने वाले दो लोगों की इस पुस्तक की व्याख्या में बहुत फर्क हो सकता है। जब आप प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करते हैं, आप अपनी व्याख्या को निर्देशित करने वाले निष्कर्षों पर पहुंचेंगे (और चाहिए)। परन्तु, इस बात में सावधान रहें कि आप अपने साथी विश्वासियों को अस्वीकार न करें जो भिन्न निष्कर्षों पर पहुचते हैं। ये बाइबल की व्याख्या के अंतर हैं, न कि बाइबल के अधिकार के विषय में मतभेद।

प्रकाशितवाक्य के विषय

यीशु प्रभु है

अंत के समय का साहित्य उन बातों को उजागर करता है जो की छिपी हुई हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु को उसकी पूरी महिमा में प्रकट करती है। सांसारिक सेवकाई के दौरान, उसकी महिमा पूरी तरह से नहीं देखी गई थी। पौलुस ने वादा किया कि वह दिन आएगा जब ''जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।''[408] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उस दिन के महिमा की एक झलक को उजागर करती है।

प्रकाशितवाक्य के कई प्रतीक पुराने नियम से लिये गये हैं। परन्तु, ये प्रतीक एक विशिष्ट मसीही धर्मविज्ञान की शिक्षा देते हैं। यह पुस्तक एक सुसंगत मसीही धर्मविज्ञान द्वारा एकीकृत है जो मानव इतिहास में परमेश्वर के कार्य के प्रत्येक पहलू को एक साथ जोड़ती है। यूहन्ना मनुष्य के पुत्र के दर्शन से लेकर विजयी मेमने के विवरण तक, प्रकाशितवाक्य का केंद्रीय विषय यीशु मसीह का प्रभुत्व है।[409] यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।[410]

सब कुछ परमेश्वर के हाथ में है

एक दुख उठा रही कलीसिया के लिए, परमेश्वर की संप्रभुता का संदेश आशा का एक महान संदेश था। यूहन्ना ने परमेश्वर का परिचय इस प्रकार दिया ''जो है, और जो था, और जो आने वाला है।''[411] प्रकाशितवाक्य 4-5 में अपने सिंहासन पर बैठे परमेश्वर का दर्शन यशायाह 6 का स्मरण कराता है। यशायाह की तरह यूहन्ना, परमेश्वर को पवित्र, राजसी और संप्रभु के रूप में देखता है। रोम के विरोध का सामना करने वाली कलीसिया के लिए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यह पढ़ना प्रेरणादायक था कि एक दिन आयेगा जब ''स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ जो उन में हैं'', वे परमेश्वर और मेमने की स्तूती करने के लिए एकत्र होंगे।[412]

परमेश्वर के लोगों के लिए विजय

अधिकांश अंत के समय के साहित्य की तरह, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मानव इतिहास में परमेश्वर के उद्देश्यों को प्रकट करती है। हालांकि ऐसे कई प्रतीक हैं जिन्हें समझने के लिए एक आधुनिक पाठक संघर्ष कर सकता है, फिर भी प्रकाशितवाक्य का समग्र संदेश स्पष्ट हैः परमेश्वर के लोगों को विजय का आश्वासन है क्योंकि यीशु प्रभु है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बार-बार पृथ्वी के बजाय स्वर्ग के विषय में अपना दृष्टिकोण प्रदान करके हमें यह स्मरण कराती है कि हम इतिहास के केवल एक ही पहलू को देखते हैं।[413] गुप्त में, परमेश्वर दुनिया में अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कार्य कर रहा है। परमेश्वर के लोगों के

---

[408] फिलिपियों 2:10।

[409] प्रकाशितवाक्य 1:9-20 और 5:6-14।

[410] प्रकाशितवाक्य 19:16।

[411] प्रकाशितवाक्य 1:4।

[412] प्रकाशितवाक्य 5:13।

रूप में, हमें अंतिम विजय का आश्वासन दिया गया है। लौदीकिया की कलीसिया को संदेश इस प्रोत्साहन के साथ समाप्त होता है, ''जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा।''[414]

आज की कलीसिया में प्रकाशितवाक्य

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ते समय हमें दो खतरों से बचना है। कुछ पाठकों को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इतनी असमंजस भरी लगती है कि वे इस पुस्तक को पढ़ने से बचते हैं। चूंकि वे इसकी सही व्याख्या नहीं कर पाते, इसलिए इसका अध्ययन नहीं करते।

इसका विपरीत खतरा यह है कि कुछ पाठकों को अपनी व्याख्या इतनी सही लगती है कि वे अपने से अलग किसी भी व्यक्ति की व्याख्या को नहीं मानते। वे छोटे-छोटे विवरणों पर अधिक ध्यान देते हैं और पुस्तक के समग्र विषय को नहीं समझते। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग प्रकाशितवाक्य के बड़े संदेश को कभी-कभी इसकी व्याख्या के विवरणों के विवादों के कारण नहीं समझते। आज कलीसिया के लिए प्रकाशितवाक्य का संदेश महत्वपूर्ण है।

ऐसे समय में जब हर साल हजारों मसीही शहीद होते हैं, यह संदेश **यीशु प्रभु है,** दुख उठाने वाले मसीहियों को दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। किसी व्यक्ति द्वारा इस पुस्तक की व्याख्या करने की पद्धतिके बावजूद भी, यह पुस्तक अंतिम विजय के वादे के साथ कलीसिया को प्रोत्साहित करती है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें स्मरण कराती है कि **विश्वासियों को अंत के समय में कैसे जीना चाहिए।** अंतिम दिनों का अध्ययन (एस्केटालॉजी) मुख्य रूप से भविष्य की घटनाओं की भविष्यद्वाणी करने के विषय में नहीं है; एस्केटालॉजी का प्राथमिक मुद्दा आज परमेश्वर के परम उद्देश्यों के प्रकाश में जीवन है। विश्वासि होने के नाते, प्रकाशितवाक्य हमें परमेश्वर के उद्देश्यों पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सेवकों के रूप में, हम अपनी मण्डली विश्वासयोग्यता में बढ़ाने के लिए प्रकाशितवाक्य का प्रचार करते हैं। प्रकाशितवाक्य को भविष्य में होने वाली घटनाओं के छिपे हुए संदेशो की पुस्तक समझकर पढ़ने के बजाय, हम इसे आज परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के वचन के रूप में पढ़ते हैं।

---

[413] उदाहरण के लिएः 6:1-7:8 पृथ्वी पर के हैं; 7:9-8:6 स्वर्ग में के हैं। 8:7-11:14 पृथ्वी पर के हैं; 11:15-19 स्वर्ग में के हैं।

[414] प्रकाशितवाक्य 3:21।

निष्कर्ष

जॉन और बेट्टी स्टैम चीन में मिशनरी थे जब 1934 में कम्युनिस्ट बलों ने उनके शहर पर हमला किया था। इस युवा जोड़े को फिरौती के लिए पकड़ लिया गया, और सुरक्षा के तहत जूलूस निकलाते हुए मियाओशेओ के शहर में ले जाया गया। एक राहगीर ने पूछा, ''तुम कहाँ जा रहे हो?'' जॉन स्टैम ने उत्तर दिया, ''हम नहीं जानते कि वे कहाँ जा रहे हैं, परन्तु *हम* स्वर्ग जा रहे हैं।''

अगले दिन, जॉन और बेट्टी स्टैम का एक कम्युनिस्ट जल्लाद द्वारा सर कलम कर दिया गया। जॉन ने अपना अंतिम पत्र अपने मिशन के वरिष्ठ अधिकारियों को लिखा और इस पत्र को उन तक अपनी छोटी बेटी के कपड़ों में छिपाकर पहुंचाया। इस पत्र का इन शब्दों के साथ अंत होता है, ''...हमारे द्वारा केवल परमेश्वर की महिमा हो, भले ही जीवन या मृत्यु द्वारा।'' जॉन और बेट्टी स्टैम को पहले ही प्रकाशितवाक्य की सच्चाई पता थीः यीशु ही प्रभु है और अंतिम विजय हासिल करेगा। चाहे जीवन द्वारा या मृत्यु द्वारा, सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है और उसके विचार सबसे उत्तम हैं।

पाठ के असाइनमेंट

निम्नलिखित असाइनमेंट से इस अध्याय की अपनी समझ को दर्शायेंः

(1) निम्नलिखित में से **एक** असाइनमेंट चुनेंः

- अपनी कलीसिया की ज़रूरतों के लिए सा

  त कलीसिया में से एक को लिखे गये संदेश का उपयोग करके एक उपदेश या बाइबल पाठ तैयार करें। यह एक 5-6 हाथ से लिखे हुए प्रष्ठ या एक रिकॉर्ड किया हुआ उपदेश या पाठ हो सकता है।

- जब आप प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं, ध्यान दें कि कौन सा अध्याय पृथ्वी पर हो रही घटानाओं के विषय में है और कौन सा अध्याय स्वर्ग में हो रही घटनाओं के विषय में दृष्टिकोण प्रदान करता है। एक छोटा निबंध लिखें। इस निबंध में आप संक्षेप में बताएं कि प्रकाशितवाक्य हमें सांसारिक घटनाओं के विषय में स्वर्ग के दृष्टिकोण में क्या बताता है। स्वर्ग का दृष्टिकोण पृथ्वी पर हमारे सीमित दृष्टिकोण से कैसे भिन्न है?

(2) इस पाठ की विषय-वस्तु के आधार पर एक परीक्षा लें। इस परीक्षा में कुछ वचन शामिल होंगे जिनको आपको याद करना है।

गहराई से खोदना

प्रकाशितवाक्य का अधिक अध्ययन करने के लिए, कृपया निम्नलिखित संसाधन देखें:

मुद्रित स्त्रोत

Gundry, Stanley N., Kenneth L. Gentry, Sam Hamstra, Jr., C. Marvin Pate, and Robert L. Thomas. *Four Views on the Book of Revelation (प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर चार दृष्टिकोण)*। Zondervan, 1998.

Gundrey, Stanley N., Darrell L. Bock, Kenneth L. Gentry, Robert B. Strimple, and Craig A Blaising. *Three Views on the Millennium and Beyond (सहस्त्र वर्ष और उसके पार के तीन दृष्टिकोण)*। Zondervan, 1999.

Gundrey, Stanley N., Alan Hultberg, Craig A. Blaising, and Douglas J. Moo. *Three Views on the Rapture: Pretribulation, Prewrath, or Posttribulation (तीन दृष्टिकोण स्वर्ग पर उठा लिये जाने परः बड़े क्लेश से पहले, कोप से पहले या बड़े क्लेश के बाद).* Zondervan, 2010.

Osborne, Grant. *Revelation (प्रकाशितवाक्य).* Baker, 2002.

Rotz, Carol. *New Beacon Bible Commentary: Revelation (नई बीकन बाइबल समीक्षाः प्रकाशितवाक्य)*। Beacon Hill Press, 2012.

ऑनलाइन स्त्रोत

‘‘Revelation and Apocalypticism’’ (प्रकाशितवाक्य और सर्वनाश)http://www.seedbed.com/seven-minute-seminary/ पर

Wesley, John. Wesleyटs Explanatory Notes on the New Testament (नए नियम पर वेस्ले की व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ).

http://www.biblestudytools.com/commentaries/wesleys-explanatory-notes/

पाठ 12 के परीक्षा प्रश्न

(1) पहली सदी में ''सीज़र *डोमिनस एट देस नॉस्टर''* वाक्यांश का क्या अर्थ था?

(2) पतमुस द्वीप कहाँ है?

(3) प्रकाशितवाक्य की सबसे संभावित तारीख क्या है?

(4) उन तीन तरीकों को सूचीबद्ध करें, जिनके द्वारा यूहन्ना ने यह संदेश दिया कि यीशु प्रभु है।

(5) अंत के समय के साहित्य की दो विशेषताओं को सूचीबद्ध करें।

(6) प्रकाशितवाक्य के चार दृष्टिकोणों में से प्रत्येक को संक्षेप में परिभाषित करें।

(7) भविष्यवादियों के भविष्य के विषय में चार दृष्टिकोणों को सूचीबद्ध करें।

(8) प्रकाशितवाक्य में तीन प्रमुख विषयों को सूचीबद्ध करें।

शेपर्डस ग्लोबल क्लासरूम पाठ्यक्रम के विवरण

पुराने नियम की खोज

यह पाठ्यक्रम पुराने नियम की 39 पुस्तकों की आवश्यक विषय सूची और शिक्षाओं को सिखाता है।

नए नियम की खोज

यह पाठ्यक्रम नये नियम की 27 पुस्तकों की आवश्यक विषय सूची और शिक्षाओं को सिखाता है।

यीशु का जीवन और सेवकाई

यह पाठ्यक्रम 21 वीं सदी में सेवकाई और नेतृत्व के लिए एक आदर्श के रूप में यीशु के जीवन का अध्ययन करता है।

रोमियों

यह पाठ्यक्रम कलीसियाओं में विवादास्पद रहे कई मुद्दों पर चर्चा करते हुए, रोमियों की पुस्तक में बताए गए उद्धार और मिशनों की धार्मिक शिक्षाओं को सिखाता है।

बाइबल व्याख्याओं के सिद्धांत

यह पाठ्यक्रम हमारे जीवन और परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करने हेतु बाइबल व्याख्याओं के सिद्धांतों और तरीकों को ठीक से सिखाता है।

मसीही विश्वास

यह वचन की शिक्षाओं पर आधारित एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम है जो बाइबल, परमेश्वर, मनुष्य, पाप, मसीह, उद्धार, पवित्रआत्मा, कलीसिया और अंतिम दिनों की बातों के बारे में मसीही सिद्धांतों का वर्णन करता है।

अंतिम युग के सिद्धांत

यह पाठ्यक्रम अन्य भविष्यसूचक वचनों के साथ-साथ बाइबल की किताबें दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य को भी सिखाता है और साथ आवश्यक सिद्धांतों जैसे कि मसीह की वापसी, अंतिम न्याय और परमेश्वर के अनन्तकाल के राज्य पर ज़ोर देता है।

पवित्र जीवन के सिद्धांत और व्यवहार

यह पाठ्यक्रम बाइबल आधारित पवित्र जीवन पर विवरण देता है जो परमेश्वर एक मसीही से अपेक्षा करता है और जिसके लिए उसे सशक्त बनाता है।

कलीसिया के सिद्धांत और व्यवहार

यह पाठ्यक्रम कलीसिया और बाइबल विषयों जैसे कलीसिया की सदस्यता, बपतिस्मा, प्रभु भोज, दशमांश और आत्मिक नेतृत्व के लिए परमेश्वर के अभिप्राय और योजना का व्यख्यान करता है।

कलीसिया का इतिहास I

यह कोर्स वर्णन करता है कि कैसे कलीसिया ने प्रारंभिक कलीसिया से लेकर धार्मिक सुधार तक की अवधि में अपने मिशन को पूरा किया और मौलिक शिक्षाओं का बचाव किया।

कलीसिया का इतिहास II

यह पाठ्यक्रम बताता है कि कैसे सुधार से लेकर आधुनिक समय तक कलीसिया का विस्तार हुआ और चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

आत्मिक निर्माण

इस पाठ्यक्रम में छात्र यीशु की योग्यताओं को अपनाना, परमेश्वर के साथ उनका नाता, जैसा यीशु का उनके पिता के साथ था, उनकी विनम्रता और सहनशीलता, यीशु के आध्यात्मिक और व्यक्तिगत अनुशासनों का अमल करना, यीशु की तरह दुःख सहना, और यीशु द्वारा विकसित (कलीसिया) के प्रति प्रतिबद्ध होना सीखते हैं।

सेवकाई का नेतृत्व

यह पाठ्यक्रम अगुओं को सीखाने में सहायता करने और संस्थाओं की मान्यताएं को परखने, उद्देश्यों को साकार करने, दर्शन को साझा करने, लक्ष्य निर्धारित करने, रणनीति बनाने, उचित कदम उठाने और उपलब्धि का अनुभव करने के दौरान मसीही चरित्र पर ज़ोर देता है।

बोलचाल के सिद्धांत

यह पाठ्यक्रम बोलचाल की धार्मिक शिक्षाएं, प्रभावशाली तरीके से बोलने और बाइबल के उपदेशों को तैयार करने और उन्हें प्रस्तुत करने की विधि सिखाता है।

बाइबल आधारित सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व

यह पाठ्यक्रम बाइबल के सिद्धांतों को प्रस्तुत करता है जो सुसमाचार प्रचार के तरीकों का मार्गदर्शन करते हैं। यह सुसमाचार प्रचार के रूपों का वर्णन करता है और नए विश्वासियों को अनुशासित करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है।

मसीही प्रतिरक्षा विद्या का परिचय

यह पाठ्यक्रम मसीही विष्वलोकन के लिए वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक मूलतत्वों सिखाता है, और दिखाता है कि कैसे मसीही विश्वास तर्क और वास्तविकता के अनुरूप है।

विश्व धर्म और पंथ

यह पाठ्यक्रम विश्वासी प्रचारक को शिक्षाओं की समझ और अठारह धार्मिक समूहों की उचित प्रतिक्रिया देता है।

मसीही आराधना का परिचय

यह पाठ्यक्रम बताता है कि कैसे आराधना विश्वासी के जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है और ऐसे सिद्धांत प्रदान करती है जो आराधना के व्यक्तिगत और सामूहिक प्रथाओं का मार्गदर्शन करें।

व्यावहारिक मसीही जीवन

यह पाठ्यक्रम धन, संबंधों, पर्यावरण, सरकार के साथ संबंधों, मानव अधिकारों और व्यावहारिक जीवन के अन्य क्षेत्रों के उपयोग के लिए शास्त्र संबंधी सिद्धांतों को लागू करता है।

मसीही विवाह और परिवार

यह पाठ्यक्रम जीवन की भिन्न स्थितियों के माध्यम से मानव विकास पर मसीही दृष्टिकोण प्रदान करता है और पारिवारिक भूमिकाओं और रिश्तों के लिए वचन सम्बंधित सिद्धांतों को लागू करता है।